भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

अप्रैल –सितंबर 2023
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका, अंक –15

नव प्रभा

बीईएल कार्पोरेट कार्यालय की गृह पत्रिका

सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका विशेषांक

बीईएल को मिला राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

दिनांक 14–15 सितंबर 2023 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के करकमलों से वर्ष 2022–23 के लिए भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि., बेंगलूरु की ओर से **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार** ('ग' क्षेत्र, तृतीय) ग्रहण करते हुए श्री विक्रमन एन, निदेशक (मानव संसाधन)।

विषय–सूची

01 सोशल मीडिया में हिंदी का बोलबाला (अनूप कुमार उदेनिया) — 01
02 सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती धाक (देवराज) — 04
03 जीवन संगीत (सुरिन्द्र कुमारी) — 06
04 सोशल प्लेटफार्म में बढ़ती हिंदी (नीतिका सरीन) — 07
05 हिंदी के प्रयोग विस्तार के मंच (रेखा एस हेरेंजाल) — 10
06 हिंदी और सोशल मीडिया का महत्व (श्यामलाल दास) — 12
07 सोशल मीडिया में हिंदी की भूमिका (विजय लक्ष्मी थपलियाल) — 14
08 वैश्विक स्तर पर सोशल मीडिया और हिंदी (श्यामल नंदी) — 16
09 सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता कद (प्रीती पाल) — 18
10 सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता प्रभुत्व (नितेश तिवारी) — 19
11 सोशल मीडिया में हिंदी के विविध आयाम (सरेंद्र मोहन गिलानी) — 22
12 सोशल मीडिया में हिंदी (अजय कुमार दाश) — 24
13 सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता प्रयोग (सत्यम राज) — 25
14 सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता वर्चस्व (राजेंद्र मधुकर सागडे) — 26
15 वार्षिक प्रतिवेदन (दीनदयाल डुमरेवाल) — 27
16 6 जी तकनीकी का अवलोकन (गौरव आनंद, रोहित लाहिरी, रुचित एम एस) — 28
17 माँ गंगा (मोनिका कटारिया) — 31
18 सोशल मीडिया–रोशन होता हिंदी का दिया (लीना मौंदेकर) — 32
19 वर्ग पहेली — 33
20 राजभाषा गतिविधियां — 34
21 जीवन में शौक भी जरूरी है... — 49
22 “ದಾಸನಾಗು ನೀ ದಾಸನಾಗು”(रवि कुमार) — 50
23 हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें — 51
24 प्रोत्साहन योजना तथा अन्य राजभाषा पुरस्कार योजनाओं के विजेता — 53
25 साहित्यकार परिचय – अमृता प्रीतम — 56

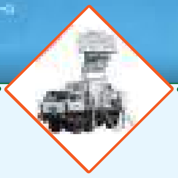

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

संदेश

आज हिंदी न केवल भारत की राजभाषा है, वरन संपूर्ण विश्व में इसके बोलने–सीखने वालों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ रही है। इसमें सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। जमाना सोशल मीडिया का है जिसके माध्यम से हम अपनी राजभाषा हिंदी का कद और भी ऊँचा कर सकते है। हिंदी की लोकप्रियता एवं प्रचार प्रसार में हो रही बढ़ोतरी इसका प्रमाण है। मुझे खुशी है कि सोशल मीडिया की इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए **नवप्रभा** का 15वां अंक "सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका" पर रखा गया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा भाषा के सरलीकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि हिंदी में कार्य करने में आसानी हो और झिझक भी दूर हो। भाषा का सरलीकरण वास्तव में एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें तकनीकी शब्दों का लिप्यांतरण, क्षेत्रीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों का समावेश, शब्दों का अनुकूलीकरण, कठिन शब्दों के बजाय सरल शब्दों का प्रयोग जैसी बातें शामिल होती हैं। इसलिए, मैं चाहता हूं कि हमारे सभी अधिकारी और कर्मचारी कार्यालयीन कामकाज में जहां तक हो सके, सरल हिंदी का प्रयोग करें।

हम राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों का अक्षरशः और भावतः पालन कर रहे हैं। हम निर्धारित लक्ष्यों से बढ़कर अनुपालन भी कर रहे हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए हमारे प्रयासों को मान्यता प्रदान करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा हमें वर्ष 2022–23 के लिए सर्वोच्च सम्मान राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है। इससे हमारी जिम्मेदारी और बढ़ती है। हमें राजभाषा कार्यान्वयन अनुपालन तक सीमित न रख, उसे पूरी आत्मीयता के साथ करना चाहिए।

मैं इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी साथियों को बधाई देता हूं।

भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
अध्यक्ष

विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)
उपाध्यक्ष

हरिकुमार आर
महाप्रबंधक (टी.पी.)
सदस्य

रमा एस
महाप्रबंधक (वित्त)
सदस्य

नीति पंडित
महाप्रबंधक (एस.पी.)
सदस्य

रामकुमार बी
महाप्रबंधक (एच.आर.)
सदस्य

प्रदीप कुमार सेठिया
महाप्रबंधक (आं.ले.प.)
सदस्य

दिब्येंदु बियांत
अ.म.प्र. (एच.आर.)
सदस्य

केशव राजू एच एस
अ.म.प्र. (सतर्कता)
सदस्य

मनोज यादव
अ.म.प्र. (एम.एस.)
सदस्य

संजीव एन देशपांडे
व.उ.म.प्र. (सी.सी.)
सदस्य

श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

नीरज कुमार चड्ढा
प्रबंधक (लाइसेंसिंग)
सदस्य

श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
सदस्य सचिव

संदेश

हिंदी भाषा हमारी संपर्क भाषा है और राजभाषा भी। यह देश के ओर–छोर में बोली जाने वाली भाषा है। संस्कृति, साहित्य और समाज की दृष्टि से भारत देश बहुत समृद्ध है। इसी तरह हमारी भाषाएं भी उतनी ही समृद्ध है। कोई भी भाषा तभी समृद्ध बनती है जब उसमें अन्य भाषाओं को अपनाने और उसके शब्दों को अपनाने की शक्ति हो। हिंदी सहित देश की सभी भाषाओं में यह गुण है। इसलिए, हमें राजभाषा के साथ–साथ अपनी मातृभाषाओं का भी अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। उसमें साहित्य सृजन करना चाहिए। हिंदी की बात करें तो आज यह केवल संपर्क भाषा या राजभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर भी इसकी अलख जग रही है।

पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन भव्य आयोजन था जिसमें भारत सरकार के मंत्रियों, उच्चाधिकारियों सहित देश के हजारों राजभाषा कर्मी उपस्थित थे। ऐसे भव्य समारोह में बीईएल के लिए राजभाषा कीर्ति सम्मान प्राप्त करना गौरव की बात है। इससे मालूम चलता है कि हम राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में अच्छा काम कर रहे हैं। हमें इसे जारी रखना होगा।

नवप्रभा का 15वां अंक आपके सामने प्रस्तुत है जो "सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका" पर केंद्रित है। हम सभी जानते हैं कि आजकल सोशल मीडिया निजी क्षेत्र, कार्यक्षेत्र, व्यवसाय और समग्र रूप से समाज में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज अंग्रेजी के साथ–साथ राजभाषा हिंदी और हमारी क्षेत्रीय भाषाओं का भी सोशल मीडिया में खूब इस्तेमाल हो रहा है। इसे देखते हुए, यह विशेषांक सम्यक प्रतीत होता है।

नवप्रभा का यह विशेषांक इससे जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग एवं प्रयास का परिणाम है। अतः मैं उन सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं और चाहता हूं कि इस अंक को भी पूरे मनोयोग के साथ पढ़ें।

विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

बीईएल के
राजभाषा अधिकारीगण

श्रीनिवास राव
कॉर्पोरेट कार्यालय

एच एल गोपालकृष्णा
बेंगलूरु कामप्लेक्स

वी सुरेश कुमार
हैदराबाद

बिमल मोहन सिंह रावत
नवी मुंबई, पुणे

श्यामलाल दास
चेन्नै

रजनी साव
सी आर एल बेंगलूरु

अनीश चौहान
पंचकुला

नवजोत पीटर
गाजियाबाद

माधुरी रावत
कोटद्वार

दिनेश उईके
मछिलिपट्नम

संदेश

हिंदी भाषा की लोकप्रियता आज बाजार और सोशल मीडिया में तेजी से बढ़ रही है। जब हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी देश–विदेश में लोगों को पूरे गौरव के साथ हिंदी में संबोधित करते हैं तो हमारा सीना चौड़ा हो जाता है। इससे पहले पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी और पी वी नरसिम्हा राव ने अंतर्राष्ट्रीय मंच से हिंदी में संबोधन दिया था। इससे जनमानस में हिंदी के प्रति सम्मान बढ़ता है, अच्छा संदेश जाता है। इन संबोधनों में विशुद्ध संस्कृतनिष्ठ या क्लिष्ट हिंदी नहीं होती बल्कि बोलचाल की, ऐसी सरल हिंदी होती है जिसमें तकनीकी शब्दों का प्रयोग जस का तस किया जाता है। हिंदी इसी रूप में आगे बढ़ती रहेगी। आज सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर हम जो ट्वीट, पोस्ट और विज्ञापन हिंदी में देख–सुन रहे हैं, उससे हमारी राजभाषा हिंदी का कद और भी बढ़ रहा है।

हमारे देश के किसी भी हिंदीतर राज्य के बाजार में हिंदी चल ही जाती है। वहां केवल अंग्रेजी से काम नहीं चलता। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की यही महिमा है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक जतन करते आ रहा है। केंद्र सरकार का उपक्रम होने के नाते हमें भी अपने सरकारी कामकाज में जितना हो सके, हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भाव की सुविचारित नीति से हिंदी धीरे–धीरे अपने पंख पसार रही है।

पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की एक महत्वपूर्ण पहल है। बीईएल कार्पोरेट कार्यालय की छमाही हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** का निरंतर प्रकाशन हो रहा है इसके लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी साथियों की प्रशंसा करता हूं। यह पंद्रहवां अंक है जो 'सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका' विषय पर केंद्रित है। आशा है, पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादकीय...

कल का हर वाकिया तुम्हारा था, आज की दास्तां हमारी है।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक-15
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका

(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षण
श्री विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)

परामर्श
श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन
श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

एक समय था जब सोशल मीडिया पर अंग्रेजी भाषा का एकछत्र राज हुआ करता था जिसे हिंदी भाषियों के लिए सोशल मीडिया की राह में एक बाधा माना जाता था। अब बदलते वक्त के साथ–साथ हिंदी भाषा ने सोशल मीडिया के मंच पर दस्तक देकर अपने अस्तित्व को और भी बुलंद तरीके से स्थापित किया है। पहले सोशल मीडिया पर अंग्रेजी का प्रयोग लोगों की जरूरत या मजबूरी हुआ करती थी लेकिन अब हिंदी का प्रयोग, हिंदी प्रेमियों के लिए प्राथमिकता और गर्व की बात है।

फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप और यहां तक कि टेक्स्ट मैसेज को भी सार्थक बनाने और मैसेज की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए आज विभिन्न कंपनियां हिंदी भाषा का सहारा ले रही हैं। उन्हें मालूम है कि हिंदी भाषा का विस्तार बहुत अधिक है और अगर उन्हें खुद को दूर तक स्थापित करना है, तो वही भाषा चुननी होगी जिसके प्रति पाठक या ग्राहक सहज महसूस करते हैं, उन्हें अपनेपन का अहसास होता है। इसके लिए हिंदी से अच्छा विकल्प भला और क्या हो सकता है।

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा को विस्तार प्रदान करने में ब्लॉगर्स की बड़ी भूमिका है। हिंदी ब्लॉगर्स की संख्या तेजी से बड़ रही है। सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ाने में व्हाट्सऐप अग्रणी साधन है जिस पर हिंदी सामग्री को प्रसारित करने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। चुटकुले, संदेश, खेलकूद, ताजा समाचार के त्वरित प्रसार का कारण हिंदी भाषा ही है क्योंकि इसके उपयोगकर्ता और पाठकों की संख्या अत्यधिक है और उन्हें हिंदी सीधे और सरलता से जोड़ने का काम करती है। यह देखकर अच्छा लगता है कि आज न केवल उम्रदराज लोग, बल्कि अंग्रेजी जानने वाले युवा भी सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का उपयोग कर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। हिंदी भाषा की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसके भावों को समझने में कोई असुविधा नहीं होती और लिखी गई बात पाठक तक उसी भाव में पहुंचती है जिस भाव के साथ उसे लिखा गया है। यह हिंदी भाषा की सरलता, सुगमता और समृद्धता का ही कमाल है कि आज विश्व स्तर पर हिंदी सोशल मीडिया के मंच पर पूरी मजबूती और शान के साथ अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है और पसंद भी की जा रही है।

नवप्रभा के इस अंक में सोशल मीडिया और उसमें हिंदी की इसी महत्ता को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। अपनी लेखनी के माध्यम से इसे सजाने और संवारने वाले सभी लोगों को शुभकामनाएं। हमें आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

सोशल मीडिया में हिंदी का बोलबाला

अनूप कुमार उदेनिया
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

किसी राष्ट्र की पहचान अक्सर उसकी सीमाओं के भीतर बोली जाने वाली भाषा से परिभाषित होती है। भारत के मामले में, हिंदी देश भर में सबसे अधिक बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह हर राज्य में व्याप्त है, भावनाओं की अभिव्यक्ति और महत्वपूर्ण जानकारी और ज्ञान के प्रसार के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है। भाषा न केवल हमारे साहित्य के लोकतांत्रिक स्वरूप को कायम रखती है, बल्कि हमारे लोकतंत्र की रक्षा भी करती है। जनता, समाज का एक महत्वपूर्ण घटक, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के माध्यम से लोकतंत्र में अपनी भागीदारी के मूल्य को पहचानती है। इस डिजिटल युग में, फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग्स, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से वैश्विक भाषाओं के प्रभुत्व को पीछे छोड़ते हुए, इंटरनेट तेजी से जनसंचार का एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है। हिंदी ने न केवल साहित्यकारों और पुरानी पीढ़ियों के लिए, बल्कि युवाओं के लिए भी बाधाओं को पार करते हुए, सोशल मीडिया के दायरे में सफलतापूर्वक अपना प्रभाव बढ़ाया है, जो आत्मविश्वास से अपनी मातृभाषा में अपनी राय व्यक्त करते हैं।

वर्तमान युग में सोशल मीडिया संचार और आत्म–अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच बनकर उभरा है। हालांकि, इस डिजिटल क्रांति के बीच, जन–जन की भाषा, हिंदी, सोशल मीडिया के क्षेत्र में अपना स्थायी महत्व कायम रखे हुए है। अनुमान है कि आने वाले समय में हिंदी इतना गहरा प्रभाव स्थापित कर लेगी कि ईमेल पते भी मुख्यतः इसी भाषा में होंगे। वर्तमान में, विभिन्न सोशल मीडिया चैनलों पर हिंदी में लिखने का विकल्प चुनने वाले व्यक्तियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विशेष रूप से, विपुल ब्लॉगर्स और लेखकों का एक बड़ा गुट हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति की पसंदीदा भाषा के रूप में उत्साहपूर्वक स्वीकार करता है, इस प्रकार यह हिंदी साहित्य की सतत गतिशीलता का उदाहरण है।

हमारे आधुनिक युग में, सोशल मीडिया विभिन्न उद्योगों, विज्ञापन, फिल्म प्रचार, राजनीतिक अभियान, साहित्यिक विस्तार, व्यापार, वाणिज्य और यहां तक कि आम व्यक्तियों के दैनिक जीवन को शामिल करते हुए एक वैश्विक मंच के रूप में विकसित हुआ है। उल्लेखनीय बात यह है कि ये सभी गतिविधियां अपेक्षाकृत कम लागत पर संचालित की जा सकती हैं। विशेषकर चुनाव प्रचार के क्षेत्र में सोशल मीडिया के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। फेसबुक लाइव जैसे प्लेटफार्मों ने सार्वजनिक

चर्चा में क्रांति ला दी है, जिससे व्यक्तियों को वस्तुतः जुड़ने और लिखित टिप्पणियों के माध्यम से अपने दृष्टिकोण साझा करके विचारशील चर्चा में शामिल होने की अनुमति मिलती है। इस प्रगति के आलोक में, सोशल मीडिया ने हिंदी को महज एक आधिकारिक भाषा से एक सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त वैश्विक भाषा बनाने की महत्वाकांक्षी भूमिका निभाई है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा किए गए हिंदी भाषी वीडियो के मनमोहक आकर्षण ने विभिन्न देशों के व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित किया है। नतीजतन, हमारे देश में जो लोग हिंदी नहीं बोलते ये भी इस प्रतिष्ठित भाषा को समझने, बातचीत करने और कुशलतापूर्वक लिखने की आवश्यकता को स्वीकार कर रहे हैं।

हमारे आधुनिक युग में, जहां सोशल मीडिया सर्वोच्च है और व्यक्तियों, संस्थानों और संगठनों की लोकप्रियता और प्रभाव को निर्धारित करता है, हिंदी भाषा की जिम्मेदारी तेजी से महत्वपूर्ण हो गई है। हिंदी, ऐसी भाषा है जो भावनाओं को प्रामाणिक रूप से व्यक्त कर सकती है, इसलिए इसे संचार के विभिन्न रूपों के माध्यम से यथासंभव व्यापक दर्शकों तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। सोशल मीडिया के प्रभाव और प्रमुखता को कम नहीं किया जा सकता है और हिंदी भाषा की ताकत और हैशटैग की पहुंच का उपयोग करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारा संदेश विशाल दर्शकों तक पहुंचे। आज के डिजिटल युग में, सोशल मीडिया चर्चाओं और घोषणाओं का प्राथमिक मंच बन गया है, यहां तक कि प्रधानमंत्री जैसी सम्मानित हस्तियों के लिए भी इसकी अद्वितीय गति और व्यापक पहुंच ने इसे अपने आप में एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में स्थापित किया है। इसके अलावा, हैशटैग के उपयोग ने इसके महत्व को और बढ़ा दिया है। एक प्रासंगिक हैशटैग को शामिल करके, हम हिंदी में अपने संदेश को तुरंत अन्य संबंधित पोस्ट से जोड़ सकते हैं, जिससे हमें एक ही पृष्ठ पर समान सामग्री का संग्रह देखने की अनुमति मिलती है।

यूट्यूब हमारे देश में एक परिष्कृत और सम्मोहक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के रूप में उभरा है, जो असंख्य समृद्ध अनुभवों के केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। यह केवल शैक्षिक सामग्री तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पाक कला, साहित्यिक गतिविधियों, नृत्य, संगीत, कॉमेडी और मनोरम कार्यक्रमों की एक श्रृंखला को भी शामिल करता है। अपलोडिंग के माध्यम से किसी की प्रतिभा को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिसने अनगिनत दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया है जो अब लाइव स्ट्रीमिंग का आनंद ले सकते हैं। गौरतलब है कि इस प्लेटफॉर्म पर बनाए और देखे जाने वाले अधिकांश वीडियो हिंदी भाषा में हैं। इसी तरह, भारत में फेसबुक की उपयोगकर्ता संख्या अक्टूबर 2023 तक बढ़कर 385,700,000 हो गई है, जो देश की आबादी का उल्लेखनीय 22.1% है। सोशल मीडिया के उपयोग में इस निर्विवाद उछाल का श्रेय हिंदी भाषा को व्यापक रूप से अपनाए जाने को दिया जा सकता है, जिसने व्यक्तियों को अपने विचारों और भावनाओं को आसानी से व्यक्त करने का अधिकार दिया है। सोशल मीडिया का गहरा प्रभाव व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से परे तक फैला है, क्योंकि इसने हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जागरूकता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, इसने हिंदी भाषा की उन्नति और प्रसार में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया, जो स्वाभाविक रूप से लोकतांत्रिक है, ने एक ऐसा मंच प्रदान किया है जहां हमारे अधिकांश साथी हिंदी को संचार के प्राथमिक साधन के रूप में अपनाते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इस भाषाई एकता ने हमारी प्रिय भाषा के प्रचार और संरक्षण को और आसान बना दिया है।

सोशल मीडिया रचनात्मक प्रयासों में लगे लोगों के लिए एक मूल्यवान साथी के रूप में उभरा है। इसने नवोदित लेखकों को साहित्य में नए क्षितिज तलाशने के लिए एक मंच प्रदान किया है। चाहे वह ट्विटर के माध्यम से हो या अन्य समान माध्यमों के माध्यम से, ये प्लेटफॉर्म व्यक्तियों को सफलता की महान ऊंचाइयों तक ले जाने या कुछ ही मिनटों में उन्हें नीचे गिराने की क्षमता रखते हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया ने जनसंचार और जागरूकता की एक नई भावना को बढ़ावा दिया है, जो सदियों से अनुपस्थित थी। इस सामूहिक चेतना को कठोर मानदंडों या मानकों से दबाया नहीं जाना चाहिए। बल्कि, हमें भाषा और संचार पर इसके सकारात्मक प्रभाव का जश्न मनाना चाहिए और इसे बिना किसी सीमा के फलने–फूलने देना चाहिए। संक्षेप में, सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा के उपयोग में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है। इसने न केवल हिंदी साहित्य के दायरे का विस्तार किया है, बल्कि इसके सार को भी बदल दिया है। यह अपरिहार्य है कि जैसे–जैसे एक भाषा को विविध क्षेत्रों और समुदायों द्वारा अपनाया जाता है, उसका स्वरूप स्वाभाविक रूप से विकसित होगा। हालांकि, उन्नत तकनीक के आगमन के साथ, हिंदी अब सभी डिजिटल प्लेटफार्मों पर आसानी से उपलब्ध है। इसलिए, हमें इस विकास को इसकी शुद्धता की अत्यधिक जांच किए बिना अपनाना चाहिए, क्योंकि यह आम जनता के लिए अभिव्यक्ति का एक सरल और सुलभ माध्यम के रूप में कार्य करता है।

सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती धाक

देवराज
गाज़ियाबाद यूनिट

प्रकृति में सभी प्राणी अपने सदृश अन्य प्राणियों से विचार–विनिमय हेतु अपनी–अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं। जंगल में शेर दहाड़ कर अपने क्षेत्र का आधिपत्य प्रदर्शित करता है, हाथी चिंघाड़ते हैं, बंदर गुर्राते और चीखते हैं, चिड़ियाएँ चहचहाती हैं, मेंढक टर्राते हैं तो मक्खियाँ भिनभिनाती हैं, गाय–भैंस रंभाकर अपने बच्चों को बुलाते हैं, घोड़े हिनहिनाते हैं, कुत्ते अंजान व्यक्ति / परिस्थितियों में भोंककर चेतावनी देते हैं आदि। इस प्रकार सभी पशु–पक्षी–कीट समाज एक दूसरे से अपनी–अपनी भाषा में संवाद स्थापित करते हैं। आदिमानव ने जब इन्हें ऐसा करते देखा होगा तो उसने भी अन्य मानवों से वार्तालाप करने हेतु भाषा का उपयोग किया होगा। जिस–जिस क्षेत्र में जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, वैसे–वैसे उनकी भाषाओं का भी विकास होता चला गया। कालांतर में इन भाषाओं के वर्णों, शब्दों, वर्णमाला, व्याकरण आदि का निर्माण हुआ जिससे भाषाओं को लिखना, पढ़ना और बोलना आसान हुआ।

औपनिवेशिक काल में ब्रिटेन ने सर्वाधिक देशों में अपने उपनिवेश स्थापित किए जिसके चलते यह कहा जाता था कि ब्रिटिश राज में कभी सूर्य अस्त नहीं होता क्योंकि उनके उपनिवेश पूरी पृथ्वी पर फैले हुए थे। ब्रिटेन की आधिकारिक भाषा अंग्रेजी थी जो अंग्रेजों द्वारा सामान्य दिनचर्या, अन्य अंग्रेज अधिकारियों से वार्तालाप और सैन्य छावनियों को संचार–संदेशों का आदान–प्रदान करने हेतु उपयोग की जाती थी, अतः अंग्रेजी भाषा ब्रिटिश उपनिवेशों में भी उपयोग की जाने लगी। इस प्रकार 19वीं सदी में, अंग्रेजी विश्व में सर्वाधिक देशों में बोली जाने वाली भाषा और विश्व की पहली अंतरराष्ट्रीय भाषा भी बन गई थी। इसके अतिरिक्त हर देश में अपनी राष्ट्रीय भाषा का भी विकास हुआ जैसे स्पेन में स्पेनिश, फ्रांस में फ्रेंच, जर्मनी में जर्मन, चीन में मेंडेरिन और भारत में देव भाषा संस्कृत से उपजी हमारी प्यारी हिंदी।

20वीं सदी के मध्य में, विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या चीन में निवास करती थी जो दैनिक जीवन में मेंडेरिन भाषा का उपयोग करती थी, अतः मेंडेरिन विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने भाषा बन गई ।

आजादी के पश्चात भारत की जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई और यह विश्व में जनसंख्या के मामले में दूसरे स्थान पर पहुँच गया। इस बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ ही भारतीय बाजारों में अपने उत्पादों की बिक्री हेतु विभिन्न बहु–राष्ट्रीय कंपनियों के मध्य प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। हिंदी भारत में बोली जाने वाली मुख्य भाषा एवं यहाँ की राजभाषा होने से, बहु–राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारतीय लोगों के मध्य अपने उत्पादों का प्रचार करने में हिंदी भाषा का उपयोग अनिवार्य हो जाता है ।

दूसरा कारण, पिछले एक दशक में, भारत की वैश्विक स्तर पर बढ़ती हुई साख है। चाहे संयुक्त राष्ट्र संघ की अध्यक्षता की बात हो, अन्य राष्ट्रों के साथ हमारे मैत्री संबंध हों, आपदाओं के अवसर पर हमारे द्वारा की गई उनकी सेवा–सहायता हो, हमारे खिलाड़ियों का अच्छा प्रदर्शन हो या अन्तरिक्ष विज्ञान में भारतीय लोगों द्वारा कोई ऊंचा कीर्तिमान स्थापित किया गया हो। इन सबसे प्रभावित होकर अन्य देशों के लोगों द्वारा भारतीय लोगों के साथ संपर्क स्थापित करने में हिंदी भाषा का उपयोग अनिवार्य हो जाता है।

तीसरा कारण है स्मार्टफोन तकनीक, स्मार्टफोन आज खेती करने वाले किसानों और मकान बनाने वाला मजदूरों से लेकर देश के शीर्ष उद्योगपति, राजनेता, खिलाड़ी आदि सभी तक पहुँच बना चुका है। इसीलिए कभी खबर आती है कि गांव परिसर में क्रिकेट खेलने वाले अच्छे खिलाड़ियों को उद्योगपतियों ने सहायता प्रदान की है तो कभी गुमनामी में जी रहे किसी अच्छे गायक का गाना वायरल होता है तो उसे संगीत क्षेत्र से जुड़े लोगों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है।

सोशल मीडिया मनुष्य समाज में लोगों के मध्य त्वरित संदेशों के आदान–प्रदान हेतु बनाई गई प्रणाली है। इसमें व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, एक्स (पूर्व में ट्विटर), यूट्यूब आदि प्रमुख हैं। इन सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आज हिंदी का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है एवं लगातार बढ़ता जा रहा है। लोग एक दूसरे के साथ दैनिक वार्तालाप या अन्य किसी प्रकार की जानकारी साझा करने के लिए व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और एक्स (पूर्व में ट्विटर) का उपयोग करते हैं जबकि फोटो या वीडियो साझा करने हेतु व्हाट्सएप, फेसबुक और इंस्टाग्राम का उपयोग होता है। विभिन्न बहु–राष्ट्रीय कंपनियां भी भारतीय उपभोक्ताओं तक अपनी पहुंच बनाने हेतु हिंदी विज्ञापनों एवं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर हिंदी में अनुवादित (डब) किए गए विज्ञापनों का सहारा लेते हैं ।

चाहे आप चलती ट्रेन में हों और ट्रेन के खाने से संबंधी किसी समस्या के बारे में आईआरसीटीसी को खबर करना चाहते हों या किसी आपदा / संकट के वक्त पुलिस विभाग से संपर्क करना चाहते हैं। दुर्घटना के वक्त नजदीकी अस्पताल से एंबुलेंस मंगवाना हो या खेलों पर अपनी राय जाहिर करना हो। किसी खिलाड़ी टीम के अच्छे प्रदर्शन पर उन्हें उनकी प्रशंसा करनी हो या किसी सामाजिक, नैतिक, स्थानीय या राष्ट्रीय मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करने हों, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आपको हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते हैं। फिल्म उद्योग से जुड़े लोग अपनी नई फिल्मों के आगमन दिनांक एवं उनके प्रदर्शन से जुड़ी राय लेने हेतु भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं। समाचार एजेंसियाँ सोशल मीडिया पर स्थानीय लोगों से उनकी समस्याओं की जानकारी लेती हैं, किसी आपदा के अवसर पर (भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, तूफान, चक्रवात, बादल फटना, ट्रेन दुर्घटना आदि) स्थानीय जनता वीडियो बनाकर समाचार एजेंसी को पहुंचाती है ताकि उनका संदेश सबको प्रसारित किया जा सके।

एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर कभी अन्य देशों के प्रधानमंत्री हमारे देश के स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस की बधाई देते हैं तो कभी किसी अन्य देश के क्रिकेटर भारतीय क्रिकेट टीम से संबंधित विषयों पर ट्वीट करते हैं। शीर्ष भारतीय कंपनियों के अध्यक्ष एक्स पर अपने विचार जाहिर करते हैं, युवाओं को प्रेरित करते हैं और खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। एक्स पर ही, भारतीय राजनेता विभिन्न उत्सवों और त्योहारों की बधाई देते हैं, कभी रेल मंत्रालय और राजमार्ग मंत्रालय अपने रेलवे पुल और विभिन्न राजमार्गों की सुंदर तस्वीर साझा करते हैं।

यूट्यूब पर लोग तरह–तरह के वीडियो बनाकर अपलोड करते हैं जिनमें यात्रा, पर्यटन, धर्म, कर्मकांड, ज्योतिष, पाक कला बिजली के कार्य, प्लंबिंग, एसी रिपेयर, फ्रिज रिपेयर, खेल, राजनीति, किसी उत्पाद के बारे में, औषध विज्ञान, खगोल, इतिहास आदि प्रमुख हैं। कुछ लोग

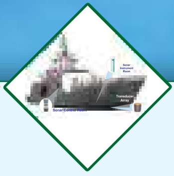

वीडियो बनाकर द्रुत गति से वायरल करते हैं ताकि औरों तक शीघ्र कोई खबर पहुंचाई जा सके और अन्य लोग उस पर प्रतिक्रिया भी कर सकें।

फेसबुक पर आप अपने बाल्यकाल के मित्र, विद्यालयों के मित्र, विश्वविद्यालय के मित्रों से जुड़े रह सकते हैं और उनके साथ अपने वर्तमान फोटो और वीडियो शेयर कर सकते हैं। यहाँ कोई जंगल में घुसकर पेड़–पौधों का वीडियो बना रहा होता है तो कोई समुद्र की गहराइयों से जल–जीवन का, कोई अंतरिक्ष के वीडियो अपलोड कर रहा है तो कोई पहाड़ों की चढ़ाई का, कोई बर्फीली चोटियों से वीडियो भेज रहा है तो कोई रेगिस्तान के धोरों से, कोई चाट–पकौड़ी के ठेले पर खड़ा होकर वीडियो बना रहा है, कोई खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले किसी खिलाड़ी का की प्रशंसा कर रहा है, कोई किसी फिल्म पर अपने रिव्यू भेज रहा है तो कोई रूस–यूक्रेन युद्ध पर अपने विचार रख रहा है।

लाभ और हानि एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं। जहां सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचना प्रसारण में महती भूमिका निभाई है वहीं असामाजिक तत्वों द्वारा उनके दुरुपयोग से भी इनकार नहीं किया जा सकता। साइबर ठग फेसबुक पर आपसे जुड़ी जानकारियों को हैक करके उनका गलत उपयोग करते हैं, ऐसे प्लेटफार्म पर फर्जी वीडियो अपलोड करके आपके नाम से आपके संबंधियों से पैसे मांगे जाते हैं जैसे आप किसी मुसीबत में हों। फेसबुक पर आपसे जुड़ी जानकारियों का उपयोग करके आपके बैंक अकाउंट का पासवर्ड हैक करने की कोशिश करते हैं। यहां व्यक्ति का विवेक कार्य करता है कि क्या जानकारी सही है और क्या जानकारी सही नहीं है तब जाकर कहीं सही निर्णय आप ले सकते हैं अन्यथा आपका निर्णय गलत सिद्ध होते हैं।

उपरोक्त तीनों कारणों के चलते सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की भूमिका दिनों–दिन बढ़ती जा रही है और आशा है कि जल्दी ही हिंदी विश्व की सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली भाषाओं में प्रथम स्थान पर होगी ।

जीवन संगीत

सुरिन्द्र कुमारी
पंचकूला यूनिट

जीवन को अपनी आयु को और समय को व्यर्थ
काटना, गवाना यह जीवन का आदर्श नहीं। आनंद पूर्वक
जीवन व्यतीत करना यह जीवन का आदर्श है।
बहुत से लोग बस अपने दुखों के गीत गाते हैं
दीवाली हो कि होली हो, सदा मातम मानाते हैं
मगर दुनियां उन्हीं की रागनी पर झूमती हरदम
जो जलती चिता में भी बैठ वीणा बजाते हैं

दुख हो या सुख, हानि हो या लाभ
जीत हो या हार अपने जीवन को
मधुर संगीत से, आनंद और उत्साह से
भरे रखना जीवन संगीत है और यह
ध्यान (Meditation) से मिलता है।

सोशल प्लेटफार्म में बढ़ती हिंदी

नीतिका सरीन
गाजियाबाद यूनिट

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

भूमिका–

सोशल मीडिया आज के समय में हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। यह न केवल हमें लोगों से जोड़ता है, बल्कि हमारे विचारों की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में भी कार्य करता है। दुनिया भर में लोग विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का व्यापक रूप से उपयोग कर अपने विचारों को अन्य लोगों के साथ साझा करते हैं जिससे लोगों के बीच संवाद बढ़ रहा है और यह समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रहा है ।सोशल मीडिया ने हिंदी को एक नया माध्यम प्रदान किया है जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के लोग साक्षरता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ाने का अवसर प्राप्त करते हैं। यह एक महत्वपूर्ण विकास है जो भारतीय समाज को जोड़ने और संवादात्मकता को बढ़ावा देने में मदद कर रहा है।

सोशल मीडिया में हिंदी के बढ़ते कदम–

पहले के समय में सोशल मीडिया प्रमुख रूप से अंग्रेजी

में चलती थी जो भारतीय उपयोगकर्ताओं के लिए कठिनाइयों का कारण बन रहा था। लेकिन आजकल सोशल मीडिया प्लेटफार्मों में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता ने इसे एक नई दिशा प्रदान की है। इसका एक प्रमुख कारण है कि हिंदी भारत के अधिकांश लोगों की मातृभाषा है और भारत में विशेषकर युवा पीढ़ी ने इंटरनेट और सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग अपनी प्राथमिक भाषा हिंदी में करना शुरू कर दिया है।

भाषा मनोभावों और विचारों की संवाहक है। हिंदी में सृजन और अभिव्यक्ति की जितनी स्वतंत्रता है शायद उतनी किसी और भाषा में नहीं है। पहले सोशल मीडिया में लोग हिंदी भी रोमन लिपि में लिखा करते थे। यूनिकोड फॉन्ट आने के बाद लोगों के लिए हिंदी को उसके सही "देवनागरी" स्वरूप में लिखना–पढ़ना और सहज हो गया है। आज सोशल मीडिया पर हिंदी सरलीकरण के लिए अनेक कार्य हो रहे हैं जैसे –गूगल मानचित्र हिंदी में देखना, हिंदी वाईस सर्च आदि आ जाने से सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग काफी हद तक बढ़ गया है। यही कारण है कि डिजिटल क्रांति के इस स्वर्णिम दौर में नई पीढ़ी का हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा है।

कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान अधिकांश लोग अपने घरों में ही रहे। ऐसे में सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर लोगों की सक्रियता बढ़ती गई। जब संक्रमण काल के चलते चारों तरफ निराशा थी, तब सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रचार बड़े पैमाने पर बढ़ा। डिजिटल क्रांति में हिंदी के आगाज के समय साहित्यकारों और कवियों में भी एकजुटता दिखी। सोशल मीडिया से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बड़ी पहचान मिली।

सोशल मीडिया पर हिंदी का बढ़ता प्रयोग सामाजिक

सूचना, जानकारी और विचारों को एक बड़े और विविध दर्शक के साथ साझा करने का माध्यम है। यह न केवल भारतीय लोगों के लिए है, बल्कि विश्वभर के लोगों के लिए भी है जो हिंदी भाषा के प्रेमी हैं। इससे हिंदी बोलने और लिखने वाले लोगों को एक महत्वपूर्ण मंच मिला है जहाँ वे अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। यह भारतीय समृद्धि और विविधता का संकेत है। हिंदी के तीव्र विस्तार का ग्राफ सोशल मीडिया पर मौजूद हिंदी प्रेमी वर्ग की ओर इशारा करता है, जो लगातार वृद्धि करता देखा जा सकता है।

हिंदी का महत्व– हिंदी भाषा राष्ट्रीय और सबसे बड़ी भाषा है और हमारी विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। सोशल मीडिया पर हिंदी का उपयोग करके हम अपनी भाषा की मर्यादा और गरिमा को बढ़ावा देते हैं। हिंदी के माध्यम से हम अपने विचारों को अधिक स्पष्ट और सुगम तरीके से व्यक्त कर सकते हैं और विभिन्न विषयों पर चर्चा कर सकते हैं। हम ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर हिंदी में लिखकर अपने विचारों को दुनिया के साथ साझा कर सकते हैं।

जनसंख्या का आकार– सोशल मीडिया पर हिंदी का विस्तार होने से हमारे सामाजिक जीवन में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है। भारत में हिंदी बोलने वाले लोगों की जनसंख्या बहुत अधिक है। सोशल मीडिया विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों से आए लोगों को एक साथ आने और बातचीत करने का अवसर प्रदान करता है।

राष्ट्रीय एकता– हिंदी भाषा भारत की एकता का प्रतीक है। सोशल मीडिया में हिंदी के बढ़ते प्रयोग ने भाषा और सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित किया है। हिंदी में सोशल मीडिया पर विचारों को साझा करने से भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के लोग एक दूसरे के साथ जुड़ते हैं और सामाजिक मुद्दों पर विचार करते हैं जिससे हमारे समाज में जागरूकता बढ़ रही है और लोग सामाजिक बदलाव को लेकर जागरूक हो रहे हैं।

शिक्षा– सोशल मीडिया का उपयोग हिंदी में शिक्षा के क्षेत्र में भी बढ़ रहा है। विभिन्न शिक्षा संस्थानों, विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा तैयार की गई शिक्षा सामग्री हिंदी में सोशल मीडिया पर साझा की जा रही है, जिससे विद्यार्थियों को अधिक सहयोग मिल रहा है और उनकी शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।

संस्कृति– सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपनी भाषा और संस्कृति को प्रस्तुत करते हैं और दुनिया के साथ अपने मूल्यों और धार्मिकता को साझा करते हैं जिसके परिणामस्वरूप, हिंदी भाषा का सोशल मीडिया पर बढ़ता उपयोग समृद्धि का स्रोत बन गया है।

युवा पीढ़ी की संवादात्मकता– वेबसाइट्स और ऐप्स पर हिंदी में लिखने और चैट करने का रुझान बच्चों से लेकर वयस्कों तक सभी के बीच में प्रचलित हो गया है। इसके परिणामस्वरूप, हिंदी का प्रयोग सोशल मीडिया पर बढ़ गया है जिससे युवा पीढ़ी अपनी मातृभाषा के प्रति अधिक संवादात्मक हो गई है और उन्हें गर्व है कि वे हिंदी में अच्छा लिखने और बोलने की क्षमता रखते हैं।

नए रचनाकारों के लिए उपयुक्त प्लेटफार्म– फेसबुक और वाट्सएप के माध्यम से नए रचनाकार अपनी मौलिक रचनाओं को जन सामान्य तक पहुंचाकर लोगों की प्रतिक्रिया व समीक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनके प्रतिभा को निखारने में सोशल मीडिया 'मील का पत्थर' साबित हो रहा है।

बहुराष्ट्रीय कंपनी में उपयोग– अपने उत्पादों की तरफ ध्यान आकर्षित करने के लिए विभिन्न कंपनियां हिंदी भाषा का सहारा ले रही हैं। वे जानती हैं कि हिंदी भाषा का विस्तार काफी तेजी से हो रहा है और खुद को दूर तक

स्थापित करने के लिए उन्हें वही भाषा चुननी होगी जिसके प्रति पाठक या ग्राहक सहज और पारिवाहिक महसूस करता हो। इसके लिए हिंदी से अच्छा विकल्प और कोई हो ही नहीं सकता।

इसके अलावा, हिंदी सोशल मीडिया पर अपने संवादिक कौशल और प्रकृति को प्रदर्शन करने का अवसर भी प्रदान करता है।

केपीएमजी इंटरनेशनल द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक 28 करोड़ लोग चैट एप पर, 36 करोड़ लोग डिजिटल इंटरटेनमेंट पर और 26 करोड़ लोग सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं। भारत में 28 प्रतिशत सर्च क्वेरी वॉयस के माध्यम से होती है और हिंदी वॉयस सर्च क्वेरी में प्रतिवर्ष 400 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हो रही है।

यह हिंदी भाषा की सुगमता, सरलता और समृद्धता का ही कमाल है कि हिंदी आज विश्व स्तर पर सोशल मीडिया के मंच पर खुद को सुशोभित कर पाई है और काफी पसंद की जा रही है। अंग्रेजी में लिखते समय शब्दों के चयन में काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। हिंदी तो हमारी अपनी बोलचाल की भाषा है, ऐसे में फेसबुक, व्हाटस्एप और ट्विटर पर लिखने में आसानी होती है। कई आसान हिंदी कीपैड भी प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं। यहाँ तक कि आने वाले समय में हिंदी भाषा का वर्चस्व इतना बढ़ जाएगा कि ईमेल आईडी भी हिंदी में बनाई जाने लगेगी।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: सोशल मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा है। सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा को विस्तार दिया है और इसका बढ़ता प्रयोग व्यक्ति, समाज, और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। तकनीकी दृष्टि से सभी चुनौतियों से निपटने के बाद आज हिंदी भाषा सभी प्लेटफार्म पर उपयोग हेतु उपलब्ध है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज के हर वर्ग ने सोशल मीडिया को अपनी स्वीकृति प्रदान की है तदर्थ प्रबल संभावना है कि आने वाले समय में हिंदी भाषा की स्वीकार्यता और उपयोगिता अपना व्यापक वर्चस्व स्थापित करेगी जिससे हम अपनी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं और अपनी धरोहर को जीवंत रख सकते हैं।

***"सोशल मीडिया पर अंग्रेजी को पछाड़ा है,
हिंदी भाषा ने अपना वर्चस्व संवारा है।"***

दुनिया की पहली एंबुलेंस कुछ ऐसी दिखती थी

हिंदी के प्रयोग विस्तार के मंच

रेखा एस हेरेंजाल
कॉर्पोरेट कार्यालय

धीरे धीरे बोल कोई सुन ना ले, सुन ना ले कोई सुन ना ले... यह था 1960 का जमाना.. लेकिन आजकल तो यह भाव पूरा बदल चुका है। आधुनिक काल में सारे विश्व में हमारे दिमाग में हो रहे हर विप्लव को बांटना और सबकी प्रतिक्रिया प्राप्त करना आदत बन गया है, और इस कार्य के लिए अकेला साधन है, सामाजिक माध्यम अर्थात सोशल मीडिया।

नेपोलियन के अनुसार "लाखों संगीने मेरे भीतर वह डर पैदा नहीं करती जो तीन अखबार करते हैं।" इंस्टाग्राम, फेस बुक, वाट्स एप, एक्स (ट्विटर), यू ट्यूब, लिंक्ड इन, स्नैप चाट जैसे अनेक शक्तिशाली मंच सोशल मीडिया के तहत लभ्य हैं। ये ऐसे तकनीक मंच हैं जिनका उपयोग अच्छे या बुरे दोनों उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। यह ऐसी तकनीक है जो इंटरनेट के माध्यम से अपने उपयोगकर्ता को दूसरों के साथ विचार विनिमय करते हुए अपना और अपने समाज का विकास करती है। आम जनता को अपने परिचितों एवं समाज के मध्य वार्तालाप करने की अपनी अद्भुत क्षमता के कारण सोशल मीडिया तेजी से जन–जन तक पहुंच रही है। सोशल मीडिया पिछले कुछ सालों में युवाओं में ही नहीं, बल्कि छोटे बच्चों और पुराने पीढ़ी में भी काफी लोकप्रिय होती जा रही है। कोविड महामारी ने जब सारे विश्व को अपने चंगुल में बांध के रखा था, डरा के रखा था, तब इसी सोशल मीडिया ने अपने जरिए मनुष्य में आत्मविश्वास जगाया, मनोरंजन किया और बाहरी दुनिया से संपर्क बनाए रखा।

भारत अपनी जनसंख्या के कारण सोशल मीडिया की एक बृहत उपयोगकर्ता है, इसी कारण सोशल मीडिया में भारतीय भाषाओं का परिचय जाहिर सी बात है। वैश्वीकरण के इस दौर में अंग्रेजी चाहे जितनी ताकतवर हो पर उसका कार्य भारत में बिना हिंदी के नहीं चल सकता। यही कारण है मोबाइल कंपनियों ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम्स में हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध कराई है ।

पहले सोशल मीडिया का प्रयोग करने में भाषा की जो समस्या थी, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग ने वह भी दूर कर दी है। इस मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषी जहां वाट्सऐप द्वारा एक दूसरे से वार्तालाप कर सकते हैं, वहीं यूट्यूब के द्वारा कई विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। लिंक्डइन से लोगों को रोजगार तलाशने में मदद मिल रही है। ब्लॉगिंग से उपयोगकर्ता को अपने विचारों को व्यक्त करने का मंच मिला है। सोशल मीडिया में हिंदी के परिचय के बाद आम जनता में इस मीडिया की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है।

हम जानते हैं कि भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। सामाजिक ज्ञान बढ़ाने के लिए केवल सूचना प्राप्त करना ही नहीं, प्राप्त सूचना की परख करना भी आवश्यक है। भाषा को जाने बिना प्राप्त सूचना को समझे बिना शेयर करना भी गलत होगा। सोशल मीडिया में हिंदी या अन्य भारतीय भाषा होने के कारण सूचना का समझना आसान हो रहा है।

चार्ल्स बिटर के अनुसार, "यू आर व्हाट यू शेयर", इस समस्या को दूर करने के लिए, सोशल मीडिया में आए विषयों को ठीक से समझना आवश्यक है और इसके लिए हिंदी अपनी सरलता और शब्द संपदा के कारण बेहतरीन माध्यम है।

हिंदी न केवल राजभाषा है, बल्कि भारतीयों की सशक्त संपर्क भाषा भी है। आज हिंदी राजनीति, मनोरंजन और विज्ञापनों की प्रमुख भाषा बन गई है। डिजिटल समय के दौर में हिंदी का स्वरूप भी बदला है। फेसबुक, इंस्टाग्राम एवं अन्य सोशल मीडिया ने नवोदित हिंदी साहित्यकारों को अपनी रचनाओं को श्रोताओं और दर्शकों तक तीव्र गति से पहुंचाने का कार्य किया है। अगर सोशल मीडिया में हिंदी न होती तो बहुत सारे प्रतिभाशाली लोग आगे न आ पाते, अंधेरे में खो जाते जो अब सोशल मीडिया के कारण लोकप्रिय हो चुके हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कारण है –

1 हिंदी का तकनीकी विकास – भारत में हिंदी के प्रयोग की दिशा में लगातार अनुसंधान कार्य किए जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप लेखन/टंकण की जटिलता, फॉन्ट की समस्या, की बोर्ड में भाषा परिवर्तन एवं अनुवाद के सॉफटवेयर ने कई समस्याओं का निवारण किया है।

2 बाजारवाद का दबाव – प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अनेक कंपनियां भाषा के आधार पर बाजार नियोजित कर रही हैं। सभी कंपनियां ईमेल प्रोवाइडर और सोशल नेटवर्किंग साइट हिंदी में लिखने की सुविधा उपलब्ध करा रही हैं।

3 हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा से आम जनता का जुड़ाव – घरों में, सांस्कृतिक आयोजनों में, उत्सवों में एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने में अधिकतम भारतीय हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषों का प्रयोग करते हैं। सोशल मीडिया जैसा प्रभावी माध्यम मिलने से आम जनता द्वारा हिंदी का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है।

हिंदी भाषा भारतीयता की पहचान है और देश के जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक एवं परिचायक भी है। हिंदी के साथ–साथ हमारी सभी भारतीय भाषाएं सहज, सुगम और वैज्ञानिक होने के साथ–साथ भारत के प्राचीन पारंपरिक ज्ञान, सभ्यता के विकास तथा आधुनिक प्रगति के बीच में सेतु भी हैं।

सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग से भाषा का स्वरूप भी बदला है, यहां उपयोगकर्ता निर्माता भी है जो इस माध्यम की बड़ी शक्ति एवं सीमा भी है। छवियों के माध्यम से संचार होने के कारण पारंपरिक लेखन में कमी आई है, युवा पीढी की भाषा शैली भी प्रभावित हो रही है। व्याकरण आदि पर ध्यान न देने के कारण भाषा का लालित्य घट रहा है। हिंदी के मिश्रित स्वरूप का जन्म हो रहा है और अंग्रेजी और देवनागरी भाषाओं का मिश्रण होकर पारंपरिक भाषा शैली बदल रही है। दीर्घ लेखों को पढ़ने की सहनशीलता और समझने की क्षमता घटती जा रही है।

बावजूद इसके, हिंदी के उज्जवल भविष्य के लिए उसका नई तकनीकों से जुड़ना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी तभी सशक्त बनेगी जब वह व्यापार, कारोबार, रोजगार एवं वैज्ञानिक विकास और प्रसार की भाषा बनेगी। सोशल मीडिया में हिंदी के विकास से एक ऐसा ही मंच निर्मित हुआ है जिसके जरिए उपयोगकर्ता द्वारा भाषा जगत में नई ऊर्जा का संचार हो रहा है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा था, "सरलता और शीघ्रता से सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है।" आने वाले दिनों में हिंदी का प्रयोग सोशल मीडिया में और भी बढ़ेगा, यही आशा है।

हिंदी और सोशल मीडिया का महत्व

श्यामलाल दास
चेन्नै यूनिट

सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है जो लोगों को हर एक क्षेत्र में महत्वपूर्ण जानकारी एवं ज्ञान वितरित करता है । आज इसके माध्यम से एक छोटे से छोटे गांव में बैठा व्यक्ति भी शिक्षित होने में सक्षम है और अपने सपनों को पूरा करने में सफल हो रहा है। हर संस्था, व्यक्ति, सरकार, कंपनी, साहित्यकर्मी से समाजकर्मी तक और नेता से अभिनेता तक को सोशल मीडिया में उसके वजन, प्रभाव और लोकप्रियता की कसौटी पर तौला जा रहा है। यह स्वाभाविक है कि इस नई तकनीकी–सामाजिक शक्ति और भाषा के संबंध को भी हम समझने की कोशिश करें। हर वैज्ञानिक या तकनीकी आविष्कार, यदि वह एक व्यापक समाज के लिए रोचक या उपयोगी है, अपनी एक नई जगह बना लेता है। जब यह नई तकनीक संवाद और संप्रेषण से जुड़ी हो तो स्वाभाविक है कि वह अपनी विशिष्टताओं के साथ संवाद और संप्रेषण के नए–पुराने तरीकों, उपकरणों और तकनीकों को कुछ विस्थापित करके ही अपनी जगह बनाती है ।

भले ही इन दिनों 'ग्लोबल लैंग्वेज' का चलन है, लेकिन सोशल मीडिया पर हिंदी का ही बोलबाला है। पहले हिंदी भाषी लोगों के लिए सोशल मीडिया पर काम करना बड़ा ही मुश्किल था, लेकिन आज तो सोशल मीडिया पर सक्रिय लोग हिंदी भाषा का प्रयोग न केवल खुलकर, बल्कि गर्व के साथ करते हैं। युवा पीढ़ी विशेष रूप से इसमें शामिल हैं। अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के दौर ने 'अनुवादकों' की उपयोगिता पर बल दिया तो गूगल ट्रांसलेटर जैसे अनेक 'ऐप' के कारण वे धीरे–धीरे हाशिए पर होते गए ।

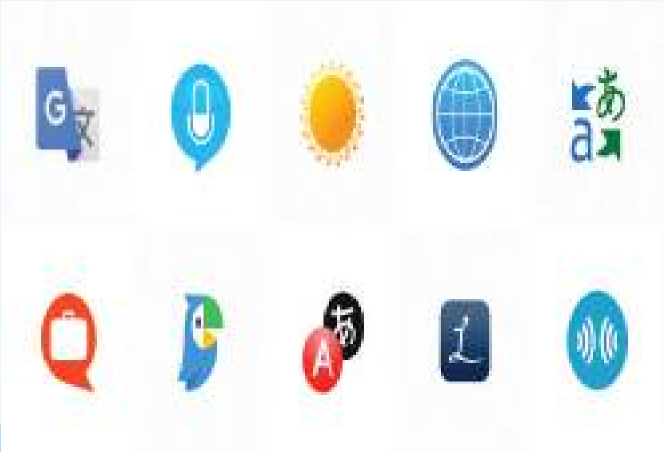

सोशल साइट यू ट्यूब पर हिंदी में रेसिपी होने से बहुत आसानी हो गई है। जो सामग्री दी जाती है उसके नाम ऐसे होते हैं कि समझ में ही नहीं आते, पर हिंदी में रेसिपी होने से बहुत सारे व्यंजन बनाना आसान हो गया है। लोग नई नई रेसिपीज भी सीख रहे हैं ।

हिंदी भाषा की खास महत्ता यह है इस भाषा को जैसे बोलते हैं वैसे ही यह लिखते भी हैं। इस प्रकार भाषा को जनसंवाद के रूप में जोड़ने का काम आज के इस इलेक्ट्रॉनिक युग में इंटरनेट के माध्यम से तीव्रगामी रूप से हो रहा है। सोशल मीडिया– फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, इंस्टाग्राम टेलीग्राम, व्हाट्सएप आदि के द्वारा आज ग्लोबल लैंग्वेज को पीछे छोड़ते हुए हिंदी भाषा ने अपने पैर पसार लिए हैं। आज सोशल मीडिया में न केवल साहित्यकार व वृद्धजन बल्कि युवा वर्ग भी अपनी बात मातृभाषा में बेझिझक रख सकते हैं। सोशल मीडिया जहां वर्तमान में संचार व अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम की भूमिका निभा रही है वही जनमानस की भाषा माने जाने वाली हिंदी भी सोशल मीडिया में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए हैं।

सोशल मीडिया ने आज बड़े–बड़े उद्योग, विज्ञापन, फिल्म प्रमोशन, चुनाव, राजनीतिक मुद्दे व राजनीतिक

टीका–टिप्पणी, साहित्य का विस्तार, व्यापार, वाणिज्य, ऑनलाइन क्रय–विक्रय, टेलीविजन व जनसाधारण आदि के लिए एक विश्वव्यापी प्लेटफार्म वह भी कम खर्च में उपलब्ध कराया है। आज चुनाव के प्रचार–प्रसार का स्वरूप सोशल मीडिया के माध्यम से बदल चुका है। आज फेसबुक लाइव ने अनेक जन समूह को ऑनलाइन रूप से अर्थात् वर्चुअल मंच से जोड़ने व लोगों में अपनी बात को कमेंट बॉक्स में लिखकर सार्वजनिक विमर्श करने की गुणवत्ता को बढ़ाया है। इस प्रकार आज सोशल मीडिया ने ही हिंदी भाषा को राजभाषा से विश्व भाषा बनाने का बीड़ा उठाया है। सोशल मीडिया में अपलोड हिंदी भाषी वीडियो ने अनेक देशों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है जिसके परिणामतः हमारे ही देश के अहिंदी भाषी भी आज हिंदी भाषा के समझने, बोलने व लिखने की जरूरत को स्वीकार कर रहे हैं ।

आज लगभग हर मुद्दे पर सोशल मीडिया में विचार विमर्श किया जा रहा है। देश के माननीय प्रधानमंत्री जी भी किसी भी शुभ समाचार के लिए जनता को बधाई पहले सोशल मीडिया का ही प्रयोग करके देते हैं। सोशल मीडिया प्रिंट मीडिया से अधिक तीव्र व जन तक पहुँच रखने वाला सशक्त माध्यम की अपनी छवि बना चुका है। पहले इसका विस्तार केवल टेलीविजन या दूरदर्शन के माध्यम से ही हुआ करता था पर आज इसका रूप विशाल हो चुका है ।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया कुछ क्षेत्र के लोगों जैसे– साहित्यकार, राजनेता, अभिनेता, तकनीकी विशेषज्ञ आदि लोगों ने सोशल मीडिया को सफलता का मार्ग बनाया है, पर इस मार्ग पर चलने के लिए हिंदी भाषा उनके लिए एक सीढ़ी का काम किया है जिसपर से गुजर कर वे अपने क्षेत्र में सफल हो पाए हैं । हिंदी भाषा सबको एक सूत्र में पिरो कर रखने वाली ऐसी भाषा है जो सभी सोशल मीडिया को भी एक साथ लाने कि ताकत रखती है, जिसके माध्यम से जनता में अनेकता होते हुए भी एकता का भाव देखा जा सकता है ।

सोशल मीडिया में हिंदी की भूमिका

विजय लक्ष्मी थपलियाल
गाजियाबाद यूनिट

मनुष्य के विकास के साथ–साथ उसके सम्प्रेषण के साधनों का विकास हुआ है। कदाचित प्रथम–द्वितीय मनुष्य सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते रहे होंगे। जैसे–जैसे समाज की स्थापना हुई तो भाषाएं विकसित हुई, समाज में विचारों के आदान–प्रदान हेतु विभिन्न भाषाएं एवं लिपियों का विकास हुआ एवं इसके साथ इनके प्रचार एवं प्रसार हेतु साधनों का विकास एवं विस्तार हुआ, इसी का एक अंग हमारी हिंदी भाषा भी है।

प्रारम्भ में जैसे कि हम जानते हैं, पुस्तकें, समाचार प्त्र, रेडियो, टेलीविजन समाज में विचारों को आदान–प्रदान करने हेतु प्रयोग में लाए गए, सूचना क्रांति एवं तकनीकी क्रांति के आने के उपरांत एक बहुत ही सशक्त प्रणाली समाज को तेजी से जोड़ने एवं एक दूसरे के विचारों से अवगत करने एवं करवाने हेतु प्रचलित हुई जो सोशल–मीडिया के नाम से जानी जाती है।

सोशल मीडिया से अभिप्राय–सोशल मीडिया एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से अपने

उपयोगकर्ताओं को आपस में संवाद या विचारों के सम्प्रेषण का अवसर प्रदान करती है। वर्तमान में सोशल मीडिया के रूप में फेस–बुक, ट्विटर, व्हाट्स–ऐप, इंस्टाग्राम, लिंकडइन, मेल, स्टार मेकर इत्यादि है।

हिंदी एवं सोशल मीडिया का संबंध– सोशल मीडिया पर कहानी, कविता, संस्मरण, रील, नाटक इत्यादि को प्रत्येक व्यक्ति डाल सकता है, वर्तमान में भारत में इस क्षेत्र में हिंदी भाषी प्रान्तों में सक्रियता अत्यधिक है, शहरी क्षेत्र के लोग हो या ग्रामीण क्षेत्र से संबंध रखते हों, सभी इसमें में बढ़–चढ़कर भाग ले रहे हैं जिससे हिंदी का प्रसार स्वतः ही हो रहा है।

इसका उदाहरण कुक्कु एप है जो अलग–अलग कहानियां–कविताएं सुना रहा है। डिजिटल समय के दौर में हिंदी का स्वरूप भी बदला है।

हिंदी का प्रचार एवं प्रसार– आज हिंदी मनोरंजन, राजनीति एवं विज्ञापनों की प्रमुख भाषा के रूप में सोशल मीडिया पर है। फेस–बुक में कई साहित्यिक पेज है जिसमें हिंदी पत्रिका पेज, हिंदी कविता पेज एवं हिंदी समीक्षा पेज इत्यादि है जिस पर समकालीन लेखक एवं कवि–कवियत्री अपनी रचनाओं को साझा करते हैं जो कि समाज के अन्य देशों एवं वर्गो द्वारा भी पढ़े जाते हैं इससे हिंदी भाषा का विकास एवं प्रसार बढ़ा है।

हिंदी का तकनीकी विकास– भारत की तकनीकी संस्था सी–डेक ने भाषा के प्रयोग की दिशा में काफी अनुसंधान किए एवं हिंदी भाषा को की–बोर्ड के द्वारा लिखने के लिए फोन्ट पर विचार करके लैटिन में हिंदी को लिखने व देवनागरी में कंप्यूटर पर लिखे जाने लायक बनाया, जिससे हिंदी की मात्राओं को लिखने की समस्या

का समाधान हुआ और हिंदी लिखनी आसान हुई अपनी इस नई प्रगति, नए रूप के कारण हिंदी पहले से अधिक लोकप्रिय हुई।

बाजारवाद के दबाव का लाभ— वर्तमान में प्रतिस्पर्धा के दौर में अन्य, अनेक कंपनियों को भारत एवं भारत से बाहर हिंदी भाषियों का बाजार नजर आ रहा है इसलिए वे अपने उपभोक्ताओं के लिए ई—मेल एवं सोशल नेट वर्क साइट हिंदी में लिखने की सुविधा उपलब्ध कर रहे हैं।

लोकप्रियता की ओर कदम— हिंदी के सोशल मीडिया पर आ जाने से यह प्रतिदिन लोकप्रियता की ओर बढ़ती जा रही है। हिंदी फिल्म के गाने फ्रांस,स्वीडन, स्कॉटलैंड में भी सुने एवं बजाए जा रहे हैं, जो लोकप्रियता को दर्शाता है।

हिंदी द्वारा सोशल मीडिया पर अध्यापन कार्य— वर्तमान में यू—ट्यूब एवं विभिन्न सरकारी साइट के द्वारा छात्रों के लिए स्वयं अध्ययन एवं शिक्षकों के द्वारा अध्यापन आसान हुआ एवं हिंदी को विकसित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है । "सबके लिए शिक्षा" साकार होती नजर आ रही है।

जन—कल्याण कार्यक्रमों का आम जनता तक लाभ— सरकारी कार्यक्रमों, जनकल्याण संबंधित विज्ञापनों एवं सरकारी तंत्र से संबंधित सूचनाओं को हिंदी में सोशल मीडिया ट्विटर, फेस बुक इत्यादि के द्वारा आसानी से पहुंचाया जा रहा है एवं जनता की प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त होती हैं।

युवा—पीढ़ी में हिंदी के प्रति आकर्षण— जो युवा पीढ़ी अंग्रेजी भाषा की गुलाम होने लगी थी, सोशल मीडिया में हिंदी के कदम पड़ जाने से उसकी ओर आकर्षित हो रही है एवं हिंदी में संवाद स्थापित करने में गर्व महसूस कर रही है, ये परिवर्तन हिंदी को चरम पर पहुचने का अवसर दे रहा है। अंत में कहेंगे कि सोशल मीडिया पर हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है, सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर, कोरा, लिंकडइन इत्यादि) द्वि—धुर्वीय मीडिया है जिसमें वक्ता के साथ श्रोता या लेखक के साथ पाठक भी अपना संवाद स्थापित कर सकता है इसलिए इसके द्वारा हिंदी स्वतः फलित एवं पुष्पित होती चली जाएगी एवं हिंदी के द्वारा सोशल मीडिया को दिया जाने वाला साहित्य, संगीत, व्याख्यान, आध्यात्मिक ज्ञान इत्यादि से यह मीडिया सशक्त बनकर विश्व—विजेता के रूप में उदयमान होगा।

"हिंदी—घट में है, ज्ञान—भण्डार अपार।
सोशल—मीडिया आओ, बनो तुम साझेदार"

हर मोबाइल की कैमरा की गुणवत्ता मेगापिक्सेल में मापी जाती है आपका कैमरा 2, 4, 8, 16 या फिर 20 मेगापिक्सेल का होगा पर क्या आपको अनुमान है की आपके आँखों का मेगापिक्सेल कितना है ? यह 576 मेगापिक्सेल है,इसीलिए आप अपनी आँखों से इतनी साफ़-साफ़ देख पाते हो आप खुद को बहुत लकी मानो की आपके पास एक नेचुरल कैमरा है जो की 576 मेगापिक्सेल का है।

वैश्विक स्तर पर सोशल मीडिया और हिंदी

श्यामल नंदी
कॉर्पोरेट कार्यालय

आजकल जब लगभग हर चीज को सोशल मीडिया में उसकी उपस्थिति से नापा जा रहा है, हर संस्था, व्यक्ति, सरकार, कंपनी, साहित्यकर्मी तक और नेता से अभिनेता तक सभी को सोशल मीडिया में उसके वजन, प्रभाव और लोकप्रियता की कसौटी पर तौला जा रहा है।

सोशल मीडिया मानस पटल पर अंकित होते ही शरीर में जो उत्साह और सम्मान की तरंगें उठने लगती हैं वह प्रत्येक हिंदी भाषी मनस्वी के लिए एक अलग ही अनुभूति है। आज हिंदी भारत के हिंदी राज्यों या भारतवर्ष की भाषा नहीं हैं अपितु यह अंतरराष्ट्रीय समाज और मानवीय समरसता का सम्प्रेषण करने वाली एक महत्वपूर्ण भाषा भी हैं, जो मानव से मानव और देश को विदेशों से जोड़कर अपने अंतरराष्ट्रीय सफर की ओर अग्रगामी है।

यदि थोड़ी देर के लिए विश्व में हिंदी के भावी स्थान की बात छोड़कर उसकी वर्तमान स्तिथि गति और महत्ता पर ही नजर दौड़ाएं तो हमारे सामने जो वैश्विक स्तर के आंकड़े आते हैं, वे बेहद उत्साह वर्धक हैं। यह सत्य है कि हिंदी भाषा में अब ज्ञान विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री भी प्रकाशित हो रही है विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में सराहनीय प्रयास हो रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए. पाठयक्रम शुरू किया गया। अन्य संस्थानो में डॉक्टरी, इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिंदी माध्यम से कराई जा रही है। हाल ही में मध्य प्रदेश के सभी 13 सरकारी मेडिकल कालेजों में हिंदी भाषा में पढ़ाई की शुरूआत की गई। दूसरी ओर अंग्रेजी के प्रसिद्ध अखबार दि इकोनामिक्स टाइम्स तथा बिजनेस स्टैंडर्ड हिंदी में प्रकाशित होकर हिंदी को एक नया आकार दे रहे हैं। यह हिंदी भाषा का बढ़ता प्रभाव ही है कि स्टार न्यूज जैसे चैनल जो अंग्रेजी के हुआ करते थे, वे हिंदी के दबाव के चलते पूर्णत: हिंदी में कैद होकर रह गए। साथ ही साथ खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी के वैश्विक क्षितिज में नए कीर्तिमान बनाने में आज के स्मार्ट फोन, विज्ञापन एजेंसियों, उपग्रह चैनलों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है वह जनसंचार माध्यमों के द्वारा मानव को मानव से जोड़ने वाली सबसे सुगम भाषा बनकर उभरी है।

यह सोशल मीडिया पर हिंदी के बढ़ते कद का ही परिणाम है कि आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जाने समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिंदी के है। सोशल मीडिया के प्लेटफार्म यूट्यूब पर सबसे ज्यादा वीडियो हिंदी में ही देखे जाते है। इसका आशय यही है कि पढ़ा–लिखा वर्ग भी हिंदी के महत्व को समझ रहा है। अंग्रेजी के अनेक पत्र हिंदी में अपने संस्करण निकाल रहे हैं। आज की हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर सवार होकर माइक्रोसाफ्ट, गूगल, याहू जैसी विश्वस्तरीय कम्पनियों की सैर पर जा रही है।

इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी पत्रकारिता दूसरे देशों में भी विविध साइट पर उपलब्ध है। सूचना तकनीक से सम्बद्ध हर बड़ी विदेशी कंपनी चाहे माइक्रोसाफ्ट, फेसबुक, एप्पल हो या गूगल, सभी हिंदी के महत्व को समझ चुकी है। वे जानती है कि भारत में गांव–गांव के घर–घर तक पहुँचना है तो सामग्री स्थानीय भाषा में ही देनी होगी। हिंदी फिल्में भी अपनी उच्चस्तरीय कलात्मक सोपानों और सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्वमन को स्पर्श कर रही है। इस प्रकार भाषा को जनसंवाद के रूप में जोड़ने का काम आज के इलेक्ट्रानिक युग में इंटरनेट के माध्यम से तीव्रगामी रूप से हो रहा है।

सोशल मीडिया फेसबुक, ट्विटर, ब्लाग, इंस्टाग्राम,

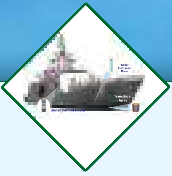

टेलीग्राम, व्हाट्सएप आदि के द्वारा आज ग्लोबल लैंग्वेज को पीछे छोड़ते हुए हिंदी भाषा ने अपने पैर पसार लिए है। आज सोशल मीडिया में न केवल पत्रकार साहित्यकार व वृद्धजन बल्कि युवा वर्ग भी अपनी बात मातृभाषा में रखने से परहेज नहीं करते हैं। इसका उदाहरण ओलम्पिक खेलो में स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा हैं जिन्होंने अपने एक साक्षात्कार के दौरान एक पत्रकार से कहा– आपको हिंदी नहीं आती, आप मुझसे हिंदी में बात कर सकते हैं। उनका यह वीडियो सोशल मीडिया में बहुत वायरल भी हुआ था।

सोशल मीडिया जहाँ वर्तमान में संचार व अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम की भूमिका निभा रही है वहीं जनमानस की भाषा माने जाने वाली हिंदी भी सोशल मीडिया में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है यहाँ तक कुछ समय पश्चात हिंदी भाषा का वर्चस्व इतना होगा कि ई–मेल आई डी भी हिंदी में बनाई जाने लगेंगी। आज सोशल मीडिया के सभी माध्यमों में हिंदी लिखने वालों की संख्या बहुत अधिक बढ़ रही है। ब्लॉग की दुनिया में सक्रिय अनेक लेखक हिंदी में ही लिखना पसंद करते हैं। सोशल मीडिया ने आज बड़े–बड़े उद्योग विज्ञापन, फिल्म प्रमोशन, राजनीतिक मुद्दे व टीका टिप्पणी, साहित्य का विषय विस्तार, व्यापार, वाणिज्य, ऑनलाइन क्रय–विक्रय, टेलीविजन व जनसाधारण आदि के लिए विश्वव्यापी प्लेटफार्म वह भी कम खर्च में उपलब्ध कराया है। आज चुनाव प्रचार का स्वरूप सोशल मीडिया के माध्यम से बदल चुका है। सोशल मीडिया में अपलोड हिंदी भाषी वीडियो ने अनेक देशों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। हिंदी सिनेमा जगत ने भी विदेशियों पर आकर्षक छाप छोड़ी है जिसके परिणामत: हमारे ही देश के हिंदीतर भाषी भी आज हिंदी भाषा को समझने, बोलने व लिखने की जरुरत को स्वीकार करते हैं। आज सोशल मीडिया में उपस्थिति को जहाँ एक नए ट्रेंड के साथ जोड़ा जा रहा है वहीं हर संस्था, व्यक्ति, सरकार, कंपनी, साहित्यकार, सामाजिक संस्था, नेता, अभिनेता सभी सोशल मीडिया पर सक्रिय है, आज लगभग हर मुद्दे पर सोशल मीडिया में विचार–विमर्श किया जा रहा है। देश के प्रधानमंत्री भी किसी शुभ समाचार के लिए जनता को बधाई देने के लिए पहले सोशल मीडिया का ही प्रयोग करते हैं एवं अपने विचार हिंदी में रखते हैं।

सोशल मीडिया प्रिंट मीडिया से अधिक तेज व जन–जन तक पहुँच रखने वाला सशक्त माध्यम है सोशल मीडिया के बढ़ते कदम की दिशा में हैशटैग ने भी अपनी गरिमा बनाए रखी है। हिंदी में जो भी संदेश देना चाहते है उसके बाद हैशटैग के साथ एक क्लिक अर्थात हम उस हैशटैग के जरिए उस संदेश से संबंधित अन्य पोस्ट को एक साथ एक पेज पर देख सकते हैं। यूट्यूब भी हमारे देश में सोशल मीडिया का माध्यम है। आज जहाँ यूट्यूब के द्वारा न केवल ज्ञान, विज्ञान की कक्षाएं बल्कि खाना बनाना, साहित्यिक गतिविधियां, नृत्य–संगीत आदि किसी भी कार्यक्रम को यूट्यूब में अपलोड कर उसे लाइव अनेक दर्शकों को दिखाने के लिए अपलोड करने का प्रचलन भी बढ़ चुका है। वर्तमान में भारत में इसके 462 मिलियन यूजर्स हैं जिनमें अधिकांश वीडियो हिंदी भाषा में बनाए व देखे जाते हैं। अक्टूबर 2023 के अनुसार भारत में फेसबुक यूजर्स की संख्या 385.7 मिलियन है जो कुल जनसंख्या का 22.1 प्रतिशत है।

इस प्रकार, सोशल मीडिया के बढ़ते प्रयोग का कारण हिंदी भाषा ही है कि आज देश विदेश में अधिकांश लोग सहज व सरल रूप से सोशल मीडिया का उपयोग कर अपने भावों को अभिव्यक्त कर रहे हैं। इसके बढ़ते प्रयोग ने न केवल हमें पहले की तुलना में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से जागरूक किया है अपितु हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसके परिणामतरू सोशल मीडिया का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। यह लोगों के तरह–तरह के रचनात्मक प्रयोगों का साथी बन रहा है, नए लेखक नए– नए साहित्य गढ़ रहे हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग असंभाविक रूप से बढ़ा है एवं अपनी समृद्ध शब्द संपदा, सुगमता और नए वैज्ञानिक उपकरणों, तकनीक के कारण हिंदी अपने वैश्विक गौरव को बढ़ाए जा रही है।

(अगर मोबाइल का आविष्कार भारत में हुआ होता तो सारी दुनिया के लोग उसे टेलीफोन नहीं दूरभाष के नाम से जानते।)

सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता कद

प्रीती पाल
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। समाज में रहकर ही वह अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकता है। प्राचीन काल में जब भाषा का उद्भव नहीं हुआ था तब मनुष्य अपने विचारों को संकेतों के माध्यम से व्यक्त करता था। जैसे–जैसे विज्ञान का विकास होता गया, वैसे–वैसे सम्प्रेषण के नए–नए द्वार खुलते गए। सर्वप्रथम समाचार पत्रों के माध्यम से फिर रेडियो के द्वारा विचारों को प्रकट किया गया। सत्तर के दशक में दूरदर्शन के आने से तो संप्रेषण को नया रूप मिला। आधुनिक युग में तकनीकी विकास ने मानव जीवन को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। इंटरनेट के विकास के बाद सोशल मीडिया सूचना क्रांति के नए साधन के रूप में विकसित हुई। आजकल फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप, स्नेपचैट, ब्लॉकिंग एवं बी चैट इत्यादि कई सोशल मीडिया का प्रयोग किया जा रहा है।

सोशल मीडिया एक ऐसी तकनीक है जो नेटवर्क के माध्यम से उपयोगकर्ता को वार्तालाप करने की सुविधा प्रदान करती है। सोशल मीडिया भारतीय युवाओं के बीच ही नहीं अपितु पुरानी पीढ़ी के लोगों के बीच भी अधिक लोकप्रिय हो रहा है। सोशल मीडिया ने दूरी को बहुत कम कर दिया है। हम मीलों दूर बैठकर अपने प्रियजनों से बात कर सकते है, उन्हें देख सकते है।

भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। भाषा समाज का दर्पण होता है। भारत में अधिकतर भाग में हिंदी भाषा बोली, समझी एवं लिखी जाती है। भारत के कोने–कोने से जन–जन को जोड़ने में सोशल मीडिया ने महती भूमिका निभाई है। अंग्रेजी कितनी भी शक्तिशाली हो पर भारत में बिना हिंदी के उसका कार्य संभव ही नहीं है, यही कारण है कि मोबाइल कंपनियां अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध करा रही हैं। डिजिटल क्रांति ने तो हिंदी का स्वरुप ही बदल दिया है। फेसबुक एवं सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्यकारों को अपनी रचनाओं को पाठकों तक आसानी से पहुंचाने में मदद की है। कई तकनीकी संस्थाओं में हिंदी भाषा के प्रयोग की दिशा में काफी अनुसंधान किए जा रहे है ।

सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग करने वाले भारत के लोग ही नहीं अपितु दुनिया भर के अनेक देश हिंदी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। आजकल व्हाट्सऐप, फेसबुक पर हिंदी भाषा में कविता भी खूब लिखी जा रही है।

सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा के लिए सुनहरा अवसर प्रदान किया है। जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते, वे भी फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप, स्नेपचैट, ब्लॉकिंग आदि पर हिंदी के प्रयोग से अपनी बात सोशल मीडिया के माध्यम से अवगत करा सकते है। सोशल मीडिया पर हिंदी के विज्ञापनों द्वारा भी हिंदी का प्रचार –प्रसार बढ़ता जा रहा है।

कुल मिलाकर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। सोशल मीडिया के इस्तेमाल से हिंदी की प्रगति व्यापक रूप से की जा रही है। देश–विदेश में हिंदी फिल्में देखी जा रही हैं और साथ ही साथ दैनिक बोलचाल में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है ।अतरू सोशल मीडिया द्वारा हिंदी के

विकास में भारत एक सशक्त शक्ति के रूप में उभर कर आ रहा है ।

सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता प्रभुत्व

नितेश तिवारी
गाजियाबाद यूनिट

भाषाएं हमारे विचारों के आदान प्रदान का माध्यम हैं। भाषाएं हमें आपस में वैचारिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जोड़ती हैं। प्रत्येक समाज अथवा देश की एक निहित भाषा होती है। यह भाषा उस आमुख देश या समाज की सांस्कृतिक पहचान होती हैं। इसी तरह हमारी भारतीय भाषाएं हमारी सांस्कृतिक पहचान हैं, जिसमें प्रमुखता से हम हिंदी का नाम लें तो अतिशयोक्ति न होगी। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा हिंदी, भारत देश की प्रमुख राजभाषा है। आज विश्वभर में 80 करोड़ से अधिक लोग हिंदी भाषी हैं। विश्व की विभिन्न संस्कृतियाँ भाषायी आधार पर ही आपस में एक दूसरे से परस्पर संबंध बनाती आई हैं। आधुनिक विश्व में सूचना प्रौद्योगिकी ने इन वैश्विक सम्बन्धों को नए आयाम प्रदान किए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने संसार को सिकोड़ के रख दिया है। वहीं आज की तेजी से भागती दुनिया ने जहां लोगों के बीच दूरी को बढ़ा दिया है, तो वहीं सूचना प्रौद्योगिकी की देन सोशल मीडिया के कारण ही आज हम व्यक्तिगत रूप से भी काफी संयोजित जीवन शैली जी रहें हैं। सोशल मीडिया ने हमारी दूरियों को और भी अधिक कम कर दिया है। सोशल मीडिया हमारी सूचना क्रांति की सफलता को दर्शाता है।

कोविड महामारी ने भी सोशल मीडिया की क्रांति के उत्प्रेरक की भांति कार्य किया है। कोविड काल ने हमारी दूरियों को काफी बढ़ा दिया था। अति संक्रामक रोग होने के कारण लोग व्यक्तिगत स्तर पर काफी दूर हो गए थे। इसलिए सोशल मीडिया ने इस दूरी को पाटने का काम किया।

हमारा प्यारा भारत और हमारे नागरिक भी इस सोशल मीडिया की क्रांति से अछूते नहीं हैं। सम्पूर्ण विश्व भारत की बहुभाषी जनसंख्या को आगामी व्यापार की नई–नई संभावनाओं के भावी ग्राहकों के रूप में देखता है। हिंदी भारत देश की प्रमुख बहुभाषी भाषा होने के नाते सोशल मीडिया पर निरंतर अपने प्रभुत्व को सिद्ध कर रही है। भारत में निरंतर बढ़ते मोबाइल तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपभोक्ता इसका सबसे बढ़ा कारण है।

सोशल मीडिया पर हिंदी के अधिकार क्षेत्र को कुछ आंकड़ों से सिद्ध किया जा सकता है। देश की 40 प्रतिशत जनसंख्या सोशल मीडिया की सक्रिय उपभोक्ता है। अनुमानतः भारत में सोशल मीडिया पर कुल 531.46 मिलियन उपभोक्ता हिंदी में सक्रिय हैं। भारतीय सोशल मीडिया की पाँच सबसे बड़ी सेवा प्रदाता एप्लिकेशन पर यदि नजर डालें तो निम्न आंकड़ें प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत आंकड़ों से सोशल मीडिया पर हिंदी का वृहत आकार पता लगता है।

सोशल मीडिया एप्लिकेशन	कुल संख्या (मिलियन में)	प्रतिशत
व्हाट्स एप्प	212.58	40%
यू ट्यूब	181.12	35%
फेसबुक	147.81	30%
इंस्टाग्राम	129.23	25%
ट्वीटर	15.00	10%

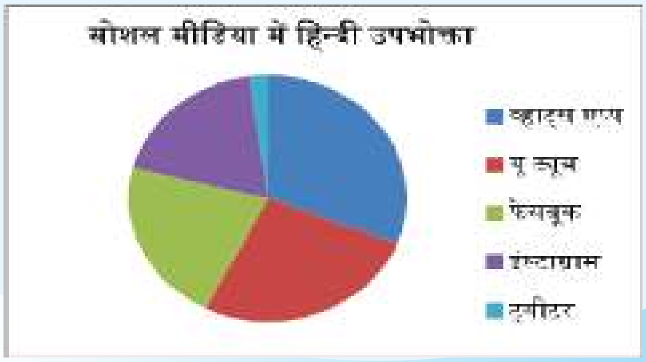

हिंदी भाषियों का सोशल मीडिया बाजार पर प्रभाव–

आज हिंदी भाषी देश तथा विश्व के कोने कोने में जा कर बस रहें हैं। जिसके कारण हिंदी का प्रचार और प्रसार गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में बढ़ रहा है। कभी टेलीविजन के हिंदी धारावाहिक देश–विदेश में हिंदी के प्रचार का अद्भुत उदाहरण थे। कंपनियाँ उपभोक्ताओं तक अपनी पहुँच बनाए रखने के लिए टीवी पर बढ़–चढ़ कर विज्ञापन करती थीं। एक कहावत है कि **ग्राहक बाजार के पीछे, बाजार ग्राहक के पीछे**। उक्त वक्तव्य से पता लगता है कि ग्राहक और बाजार एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुये हैं। टेलीविजन की बाध्यता आपके घर या कार्यालयों तक ही सीमित थी। मनोरंजन मानव जीवन का अमूल्य अंग रहा है। मोबाइल और कंप्यूटर इसका एक अभिन्न अंग बन कर उभरे क्योंकि अब आप घर और कार्यालय अर्थात आपका कार्य और मनोरंजन दोनों अब आपके साथ हैं। सोशल मीडिया प्रौद्योगिकी ने मोबाइल और कंप्यूटर के माध्यम से हमारे बीच जगह बनाई तथा उत्पाद व सेवा निर्माताओं के अधिक अधिक उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए पुल की भांति कार्य किया।

अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी के बढ़ते प्रभाव के कारण सोशल मीडिया कंपनियाँ भी अपने हिंदी भाषी ग्राहकों को छोड़ना नहीं चाहती हैं। सोशल मीडिया कंपनियाँ उन्हें आपसी प्रतिस्पर्धा में हर संभव सुविधा उपलब्ध करवा रहीं हैं। उदाहरण के लिए सभी सोशल मीडिया मंचों पर आपको हिंदी टाईपिंग की सुविधा उपलब्ध है। यूट्यूब जैसे वेबसाइटों पर हिंदी में कंटैंट बनाने वालों तथा देखने वालों की तो भरमार है। हाल ही में यूट्यूब टी–सीरीस नामक भारतीय म्यूजिक कंपनी के उपभोक्ताओं की संख्या ने सर्वाधिक उपभोक्ताओं का रेकॉर्ड तोड़ दिया था। इस से आहत हो कर एक विदेशी यूट्यूब चैनल प्यूडिपाई के उपभोक्ताओं तथा टी–सिरीज के भारतीय उपभोक्ताओं में प्रतिस्पर्धा चालू हो गयी थी।

उपभोगी वस्तुएं तथा सेवा उत्पाद बनाने वाली कंपनियों की नजर हमेशा इन हिंदी भाषी जनता पर बनी रहती है। ये कंपनियाँ सोशल मीडिया पटल पर अपने विज्ञापनों को लेकर बहुत सक्रिय रहती हैं। इन कंपनियों से विज्ञापन व्यापार में मुनाफा कमाने के लिए सोशल मीडिया सेवा प्रदाता कंपनियों में आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ती ही जा रही है। हिंदी भाषी उपभोक्ताओं पर ध्यान न देने वाली कंपनियों को प्रतिस्पर्धियों से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय सिनेमा में ओटीटी पटल का बढ़ता वर्चस्व किसी से छुपा नहीं रह गया है। ओटीटी पटल आधारित एप्प्स से आप मोबाइल पर जब चाहे कहीं पर भी अपने मनपसंद चलचित्र अथवा मनोरंजन के साधनों का लाभ उठा सकतें हैं। भारतीय सेंसर बोर्ड के नियम व प्रतिबंध इस पर लागू भी नहीं होते हैं। इसके चलते काफी अतरंगी व नया कंटैंट भारतीय दर्शकों को देखने को इस पर मिलता है। काफी प्रयोगात्मक तथा भारतीय पृष्ठभूमि से जुड़े चलचित्र देखने को मिल रहें हैं। नेटफिलक्स, सोनीलाइव, डिज्नी हॉटस्टार, एमजोंन प्राइम, वूट, जीफाइव आदि कंपनियों में हिंदी भाषी जनता को अपनी और आकर्षित करने की भरसक कोशिश कर रही हैं। ओटीटी पटल पर हाल ही में चल रहे क्रिकेट विश्व कप के दौरान हिंदी भाषी कमेंटेटर से मैचों का ताजा हाल सुनने को मिला। इस दौड़ में भारतीय टेलीकॉम कंपनियाँ भी किसी से पीछे नहीं हैं। भारत की शीर्ष टेलीकॉम सेवा प्रदाता कंपनियाँ एयरटेल, जियो के अलावा विदेशी कंपनी वोडाफोन इन सब का अपना सोशल मीडिया चलचित्र पटल है। बाजार में ऐसी खबरें भी जोरों पर हैं कि बढ़ती प्रतिस्पर्धा में आगे न रह पाने तथा मुनाफे में होती गिरावट के कारण डिज़्नी अपना

भारतीय कारोबार रिलायंस या अदानी को बेच सकता है। मिंट डॉट कॉम के अनुसार, दिखाए जाने वाले कुल कंटेंट का अकेले हिंदी का हिस्सा 50 प्रतिशत है। आने वाले समय में यह 60 से 65 प्रतिशत तक भी जा सकता है।

हमारे देश में शीर्ष समाचार पत्रों के सभी सोशल मीडिया पटल पर पेज हैं। समाचार पत्रों की आधिकारिक सोशल मीडिया एप्प्स भी मोबाइल पर उपलब्ध हैं। आप आज जिन अखबारों को सुबह–सुबह पढ़तें हैं, वे सभी आज आप से एक क्लिक की दूरी पर हैं। औसतन एक अखबार को छपने का खर्च 15 रूपये आता है। जबकि वही अखबार 5 रुपये से अधिक का नहीं बिकता है। अब समाचार पत्र घाटा तो खाने से रहा, इसलिए इस घाटे की पूर्ति विज्ञापनों से की जाती है। अब छापने की लागत से काफी कम व्यय पर पूरा समाचार पत्र मोबाइल और कंप्यूटर पर उपलब्ध है। वो भी अनगिनत उपभोक्ताओं तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। यहाँ भी हिंदी भाषी उपभोक्ता फिर से अन्य भाषा की तुलना में आगे खड़े दिखाई देते हैं।

मोबाइल गेमिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का संसार भी हिंदी के प्रभाव से अछूता नहीं रह गया है। आधुनिक गेमों की रूपरेखा हिंदी आधारित बनाई जा रही है। कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, मशीन लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आदि की रूपरेखा इस प्रकार से बनाई जा रही है जिससे हिंदीभाषी लोगों के लिए उत्पाद तैयार किए जा सकें। गूगल में यह सुविधा पहले से उपलब्ध थी। चैट जीपीटी ने इस इसका स्तर और अधिक बढ़ा दिया है। आप चैट जीपीटी से हिंदी में प्रश्न कीजिए आपको उत्तर भी हिंदी में ही मिलेगा।

वे उत्पाद व सेवाएं जिनमें हिंदी भाषा को समावेशित किया जा सकता है, हिंदी भाषियों की बढ़ती संख्या ऐसे बाजार को निरंतर उत्प्रेरित कर रही है।

हम जहां सोच भी नहीं सकते, हिंदी भाषियों को आकर्षित करने के लिए सोशल मीडिया कंपनियाँ उस सीमा तक निरंतर प्रयासरत हैं। सोशल मीडिया में निरंतर नए आयाम छूती प्रौद्योगिकी हिंदी भाषियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती है। हिंदी को लेकर निरंतर सफल प्रयोग देखने को मिल रहें हैं। सोशल मीडिया में हिंदी की संभावनाओं का संसार अंतहीन है।

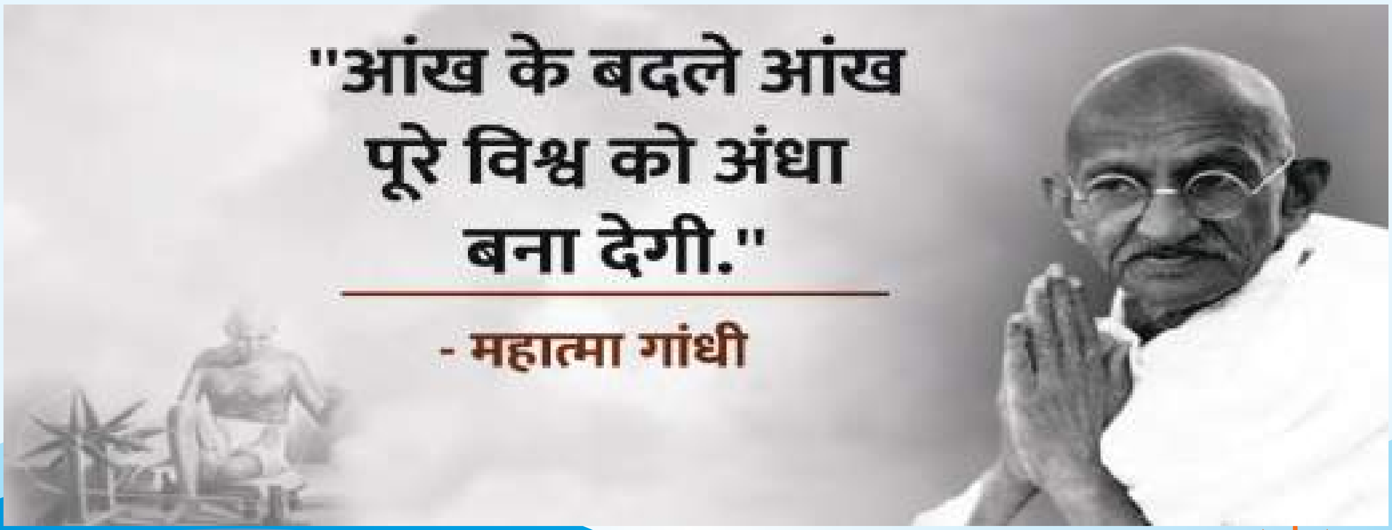

सोशल मीडिया में हिंदी के विविध आयाम

सरेन्द्र मोहन गिलानी
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने सही कहा था कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और जब हम समाज में होते हैं तो हम अलग नहीं रह सकते हैं और एक दूसरे से संवाद करने की आवश्यकता होती ही है जिसके लिए हमेशा एक माध्यम या भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। यह एक ऐसा तरीका है जो वक्ता की सामग्री को श्रोता के कान तक पहुंचाता है और फिर उनके दिल में प्रवेश कराता है, इसलिए यदि हमारी जानकारी को श्रोता तक पहुंचाने के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा श्रोता के माध्यम में है तो इसकी हमेशा सराहना की जाती है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 43.63% लोग हिंदी बोल सकते हैं और दुनिया भर में लगभग 585.5 मिलियन लोग हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं।

इस डेटा के साथ यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि हमारे देश और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक है।

सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है जो कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल पर इंटरनेट का उपयोग करके लोगों को अनंत त्रिज्या सीमा में एक दूसरे से जोड़ने में सक्षम बनाता है, जुड़ने का तरीका ऑडियो, वीडियो और लेखन भी हो सकता है। प्रत्येक तरीके के लिए सोशल मीडिया पर हमारे विपरीत व्यक्ति तक पहुंचने और जुड़ने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है।

सोशल मीडिया पर होने वाले संप्रेषण में व्यक्तिगत संदेश, राजनीतिक एजेंडा, तकनीकी जानकारी, मनोरंजक और कभी–कभी हल्के–फुल्के चुटकुले भी शामिल हो सकते हैं इसलिए संप्रेषण की भाषा दूसरे छोर पर सही जानकारी पहुंचाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं जिसने वास्तव में लोगों को किसी भी भाषा में अपने विचार साझा करने में मदद की है और अब हिंदी के अधिकतम उपयोग का उल्लेख करते हुए मोबाइल कंपनियां भी इन उपकरणों में हिंदी कीपैड को सक्षम बना रही हैं ताकि लोगों को आसानी से हिंदी के शब्द टाइप करने और बात करने को मिल सकें।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आगमन के साथ ही, गूगल और अन्य कंपनियों ने इंटरनेट की दुनिया में कुछ भी खोजने के लिए हिंदी बोलने और सुनने का विकल्प लॉन्च किया है।

यूट्यूब, जो सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा उपयोग किया जाता है, के माध्यम से हजारों करोड़ों लोग एक दूसरे से जुड़ते हैं, यूट्यूब के कारण सोशल मीडिया पर गांव के दर्शकों में भारी वृद्धि देखी गई है क्योंकि हिंदी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक घर में भी वीडियो की विस्तृत श्रृंखला प्रदान की गई है।

आम आदमी ही नहीं बल्कि सिनेमा जगत, खेल जगत, मीडिया चैनलों के क्षेत्र की बड़ी हस्तियों ने भी हिंदी भाषा के माध्यम में अपने वीडियो अपलोड करना शुरू कर दिया है और उन्हें करोड़ों दर्शक पसंद कर रहे हैं।

इसी श्रंखला को और आगे बढ़ावा देते हुए हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, जो हिंदी भाषा की अत्यधिक वकालत करते हैं और अधिक से अधिक लोगो से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया पर उनके यूट्यूब चैनल को आरंभ किया गया है जिसका माध्यम हिंदी है।

सोशल मीडिया के उपयोग से हिंदी भाषा ने तकनीकी क्षेत्र में भी प्रवेश किया है जो दुनिया के हर कोने में पहुंच रही है और इसलिए हिंदी भाषा के मूल्य को बढ़ाया है।

आज के समय में सोशल मीडिया किसी भी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है क्योंकि इसमें दुनिया भर में अरबों उपयोगकर्ता शामिल हैं।

एक भाषा के रूप में हिंदी तब और अधिक फल–फूल सकती है जब यह केवल स्कूल या कॉलेजों में शिक्षा प्रदान करने का तरीका मात्र न रहे बल्कि इसका उपयोग सोशल मीडिया के एक मंच पर अधिक से अधिक किया जाए। आज सस्ती इंटरनेट उपलब्धता के कारण मनोरंजन की सूचना और ज्ञान के अधिकतम स्रोत घर के हर कोने में पहुंच रहा है।

इंस्टाग्राम, फेसबुक और कई अन्य सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से व्यवसाय करने वाले लोग इसलिए

ऐसे व्यवसाय करने के लिए हिंदी का उपयोग करते हैं जिससे अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में मदद मिलेगी।

उदाहरण के लिए–बिहार के खान सर सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले छात्रों के बीच बहुत प्रसिद्ध हो गए हैं चाहे वह एसएससी हो, या रेलवे यहां तक कि सिविल सेवा हो, यदि सोशल मीडिया नहीं होता और उनका संचार का तरीका जो ज्यादातर हिंदी है, आज की भीड़ तक आसानी से नहीं पहुंच सकता था तो उनका डोमेन ज्ञान हमारे देश के दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाले करोड़ छात्रों तक नहीं पहुंच पाता और वे मुफ्त शिक्षा से वंचित रह जाते।

हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय हृदय से बातचीत करता है
और हिंदी हृदय की भाषा है।

महात्मा गांधी

सोशल मीडिया में हिंदी

अजय कुमार दाश
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

किसी देश की अर्थव्यवस्था पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में विकास का प्रभाव गहन रूप से पड़ता है। इससे मानव का या व्यक्तियों का जीवन भी प्रभावित होता है तथा उनके स्तर में वृद्धि होती है। कम्प्यूटर संचार तथा सूचना सामग्री के समाहार से एक ओर जहां अनेक अवसर उत्पन्न होते हैं, वहीं दूसरी ओर कई चुनौतियां भी सामने आती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया जैसी मुहिम की शुरुआत की गई है, जिसका उद्देश्य है भारत को डिजिटल रूप से सशक्त और ज्ञान अर्थव्यवस्था में तब्दील करना। इंटरनेट एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जिसमें करोड़ों कम्प्यूटर एक कम्प्यूटर से जुड़े हुए होते हैं। यह सामान्य तरीके पर कंप्यूटरों के विश्वव्यापी नेटवर्क के रूप में परिभाषित करते हैं, जो एक प्रोटोकाल के आधार पर संचार करते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम अनेक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं जिसका व्यवहार बड़े से बड़े व्यक्ति से लेकर आम जनमानस तक व्याप्त है।

सोशल मीडिया एवं उसका व्यवहार – सोशल मीडिया ऐसी वेबसाइट तथा कार्यक्रमों का संकलन है जो लोगों को एक दूसरे से बात करने, शामिल होने, जानकारी साझा करने और साथ मिलकर काम करने में मदद करते हैं। यह एक ऑनलाइन तकनीक है जो लोगों को ऑनलाइन नेटवर्क और समुदायों के माध्यम से विचार और जानकारी साझा करने की सुविधा देती है। लोग सोशल मीडिया का उपयोग करने के लिए कम्प्यूटर, टेबलेट या फोन पर वेब आधारित सॉफ्टवेयर या एप्लिकेशन का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से इंटरनेट पर व्यक्तिगत जानकारी, दस्तावेज, फिल्में और फोटो को त्वरित और इलेक्ट्रिक रूप से साझा करना आसान होता है। सोशल मीडिया की बहुआयामी उपयोगिता है जैसे एक राजनेता अपने पक्ष प्रचार के लिए, एक व्यापारी अपने व्यापार संबंधी विज्ञापन के लिए, एक वक्ता अपने वक्तव्य का प्रचार–प्रसार के लिए, एक संगठन अपने विज्ञापन के लिए आदि। आम आदमी अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों तथा अपने रिश्तेदारों के साथ संपर्क में रहने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।

सोशल मीडिया एवं हिंदी – भारत एक जनसंख्या बहुल देश है, जहां के लगभग सभी लोगों को हिंदी लिखना, बोलना और पढ़ना आता है। हिंदी न केवल हमारे देश की राजभाषा है बल्कि साधारण जनमानस की बोधगम्य तथा सुसंचार भाषा है। भारत के साथ साथ हिंदी भाषा दुनिया भर में बोली जाती है। अपने मोबाइल तथा कम्प्यूटर पर सोशल मीडिया का उपयोग करते समय सम्प्रेषण के लिए हिंदी का प्रयोग सबसे सरल माध्यम है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हाट्स एप, फेसबुक, एक्स (भूतपूर्व ट्विटर), स्नेपचैट, इन्स्टाग्राम, टेलीग्राम आदि के माध्यम से वार्तालाप करते समय एक जमाने में केवल अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया जाता था, परंतु वर्तमान स्थिति अलग है एवं इन सारे प्लेटफॉर्म में भारतीय लोगों की पसंदीदा भाषा हिंदी है। आज के जमाने में उसी भाषा का विकास संभव है, जो तकनीकी रूप से सक्षम हो। सोशल मीडिया के हर एक क्षेत्र में हिंदी भाषा अपनी क्षमता जाहिर कर रहा है। सोशल मीडिया पर चैट करना, ग्रुप बनाना एवं संगठित होना, साहित्य चर्चा परिचर्चा, ब्लॉग बनाना, विज्ञापन एवं प्रचार करना, गेम्स खेलना, मीटिंग करना, जन्मदिन, त्योहारों और विशेष अवसरों पर शुभकामनाएं भेजना, व्यावसायिक कार्य करना, खोए हुए दोस्तों और संबंधियों को खोज, कमेन्ट भेजना, एक दूसरों को आवश्यक सलाह और सुझाव देना, किसी ग्रुप में शामिल होना या नया ग्रुप बनाना आदि कार्यों के लिए हिंदी भाषा का उपयोग किया जा रहा है।

अतः हिंदी हमारे देश का गौरव है, जिसका प्रचार–प्रसार करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।

सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता प्रयोग

सत्यम राज
बेंगलूरु कामप्लेक्स

सोशल मीडिया ने हमारे समाज को एक नई दिशा प्रदान की है और हिंदी भाषा में इसकी बढ़ती भूमिका ने इसे और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। हिंदी में सोशल मीडिया का उपयोग करने वालों में वृद्धि हो रही है और यह हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में मदद कर रहा है।

सोशल मीडिया की बढ़ती भूमिका हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण है। यह न केवल हमारे समाज को एक नए संवाद का स्रोत प्रदान करता है, बल्कि यह नई पीढ़ियों को अपनी भाषा के प्रति लगाव प्रदान करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम हिंदी में अपने विचारों को साझा कर सकते हैं और भाषा को एक नए स्तर पर ले जा सकते हैं।

सोशल मीडिया ने हिंदी को एक नए संवाद का स्रोत बना दिया है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म हिंदी में उपलब्ध हैं। यहां पर हिंदी में ट्वीट्स, पोस्ट्स और वीडियो साझा किए जाते हैं और इसके माध्यम से लोग अपने विचार इस माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं।

इसके अलावा, सोशल मीडिया ने हिंदी में वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म्स को बढ़ावा दिया है, जैसे टिकटॉक और रील्स। यहां पर लोग अपने कौशल दिखा सकते हैं और अपने कौशल को उनके फॉलोवर्स के साथ साझा कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप हिंदी भाषा को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाने में मदद मिल रही है। हिंदी में सोशल मीडिया का उपयोग न केवल मनोरंजन के लिए हो रहा है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा माध्यम है जिससे समाज में सुधार कर सकते हैं। सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को एक नए डिजिटल युग में लाकर खड़ा किया है और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जा रहा है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका, हमारी भाषा की मान्यता का प्रतीक है और हमारे समाज को एक साथ जोड़ने का माध्यम है।

सोशल मीडिया में हिंदी का बढ़ता वर्चस्व

राजेंद्र मधुकर सागडे
पुणे यूनिट

सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका एवं प्रयोग में वृद्धि स्वाभाविक है। मनुष्य के चरित्र का पता उसकी भाषा और बातचीत से चलता है क्योंकि अभिव्यक्ति सहज होती है एवं अपनी बात सीधे सामने वाले के दिल में उतरती है। हिंदी में समझना–समझाना आसान होता है और पाठक की अनुभूति सरल होती है। भाव–भावना सीधे दिल की धड़कन बन सकती है। यह करोड़ों भारतीयों की भाषा तो है ही इसके अलावा हिंदीतर भाषी भी इसमें आसानी महसूस करते हैं। साथ ही, कई देशों में बहुजन की आवाज हिंदी है।

सोशल मीडिया आज जीवन के हर पहलू, आयाम और प्रत्येक कड़ी को प्रभावित कर रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से समझना एवं समझाना तथा दूसरे के दिल तक पहुंचना आसान हो गया है। आज का युग सोशल मीडिया का युग है जो निरंतर परिवर्तनीय तो है, इसके अलावा देश दुनिया की खबरें या विदेश संचार और कला, साहित्य, संस्कृति या खेलकूद के क्षेत्र में इसकी भूमिका निर्विवाद है। कई संकल्पनाओं का आदान–प्रदान हिंदी माध्यम से बहुजन तक होने लगा है। हिंदी के प्रचार–प्रसार में हमारे बॉलीवुड का योगदान अद्वितीय है। हिंदी फिल्मों के कलाकार इसी वजह से हॉलीवुड में भी अपना प्रभावपूर्ण स्थान बना रहे हैं। यह सब सोशल मीडिया पर हिंदी के बढ़ते प्रभाव की मिसाल है।

हिंदी पूरे भारत में समझी और अपने–अपने तरीके से बोली भी जाती है जो सबको एक सूत्र में बांध रही है। दक्षिण भारत और उत्तर भारत में भाषायी दूरी कम हो रही है। इसमें सोशल मीडिया की महती भूमिका है। विभिन्न भाषाओं और राज्यों के बावजूद हिंदी में सहज वार्तालाप और विचारों के आदान–प्रदान से आजीविका पहले से कहीं सुगम बन रही है। हिंदी वाचन से सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ रही है जो पहले नहीं थी। सोशल मीडिया में प्रयोग के कारण जन भाषा के तौर पर हिंदी उच्च मानक स्थापित कर चुकी है। इससे हिंदी का गौरव बढ़ रहा है।

हमारे प्रधानमंत्री श्री मोदीजी देश–विदेश में हिंदी वार्तालाप करते हैं जो सोशल मीडिया पर वायरल होकर सभी लोगों तक पहुंच रही है। देश–विदेश में हिंदी को प्रतिष्ठा मिलना सोशल मीडिया का ही प्रभाव है। विश्व के 132 देशों में बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग आपस में हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशिया की प्रतिनिधि भाषा का स्थान हिंदी को ही प्राप्त हुआ है। दुनिया में लगभग 6400 बोलियां और भाषाएं बोली जाती हैं लेकिन इन भाषाओं के बोलने वालों की संख्या कम है जिसके कारण ये भाषाएं संकट में आ रही थी। सोशल मीडिया के कारण इन भाषाओं को भी प्राण वायु मिलने लगी है। सोशल मीडिया में प्रयोग के कारण हिंदी बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हिंदी विश्व संवाद की एक सशक्त भाषा के तौर पर उभर रही है। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को अंगीकार या स्वीकार करने से हिंदी समृद्ध हो रही है।

हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कई वर्षों से सरकारी कार्यालयों में हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा तथा हिंदी माह मनाए जा रहे हैं। परंतु वे विभागों, कार्यालयों तक ही सीमित रहते हैं जिसे कार्यालय से बाहर ले जाने की आवश्यकता है। आज सोशल मीडिया के आने के बाद ऐसे आयोजनों को भी अधिक प्रचार–प्रसार मिल रहा है। लोग हिंदी दिवस आदि पर शुभकामनाएं संदेश हिंदी में भेजते हैं। इससे अब इन उत्सवों को अधिक महत्व मिलता है। सरकारी मशीनरी भी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सोशल मिडिया का सहारा लेती है। आज हम पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है और इसमें हिंदी प्रमुख भूमिका निभा रही है।

"हिंदी हैं हम, हिंदी वतन है, हिंदोस्ता हमारा"

वार्षिक प्रतिवेदन

दीनदयाल डुमरेवाल
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

लेनदेन का विवरण है इसमें,
निदेशक मंडल की वाणी है।
वित्तीय विवरण व तुलन–पत्र
बता देते कि लाभ या हानि है।।

देशीकरण हो या जोखिम प्रबंधन,
वित्तीय व क्रियात्मक निष्पादन।
बताती सबकी सत्य स्थिति,
चाहे कैसी भी हो परिस्थिति।।

अगर बोर्ड रिपोर्ट है इसका चेहरा,
लेखापरीक्षा रिपोर्ट इसकी वाणी है।
वित्तीय आंकड़े इसके रग रग में बसे हैं,
गवर्नेंस व निरंतरता इसकी जिंदगानी है।।

अध्यक्ष कराते भविष्य दर्शन,
बोर्ड रिपोर्ट है मुख्य आकर्षण।
नीति व नियत का करती बखान
लेखा परीक्षक इसमें फूकते जान।।

मानव संसाधन हो या शोध विकास,
सामाजिक जिम्मेदारी व गुणता प्रयास।
सबका उत्थान पतन इसमें समाया,
सालभर में क्या खोया क्या पाया।।

बनी रहे पवित्रता इसकी,
यह कसम सदा निभानी है।
विश्वास न टूटे सदस्यों का,
इतनी पारदर्शिता लानी है।।

6 जी तकनीक का अवलोकन

गौरव आनंद
पीडीआईसी बेंगलूरु

रोहित लाहिरी
पीडीआईसी बेंगलूरु

रुचित एम एस
पीडीआईसी बेंगलूरु

6 जी का पूरा नाम है – 6 जनरेशन यानी छठी पीढ़ी और यह दूरसंचार में मोबाइल सिस्टम मानक है। यह 5 जी सेल्युलर तकनीक का नियोजित उत्तराधिकारी जो संभवतः काफी तेज होगी। यह 5जी के उपरांत एक महत्वपूर्ण क्रमागत उन्नत स्वरूप है। यह भी 5जी की तरह रेडियों तरंगों पर काम करेगा, लेकिन फिलहाल इस तकनीक का कोई अस्तित्व नहीं है। इसकी विशेषता है कि ये अलग–अलग प्रकार के नेटवर्क को स्व समुच्चय करने में सक्षम होगा। यह 5जी नेटवर्क की तुलना में उच्च आवृत्तियों का उपयोग करने में सक्षम होगा और काफी

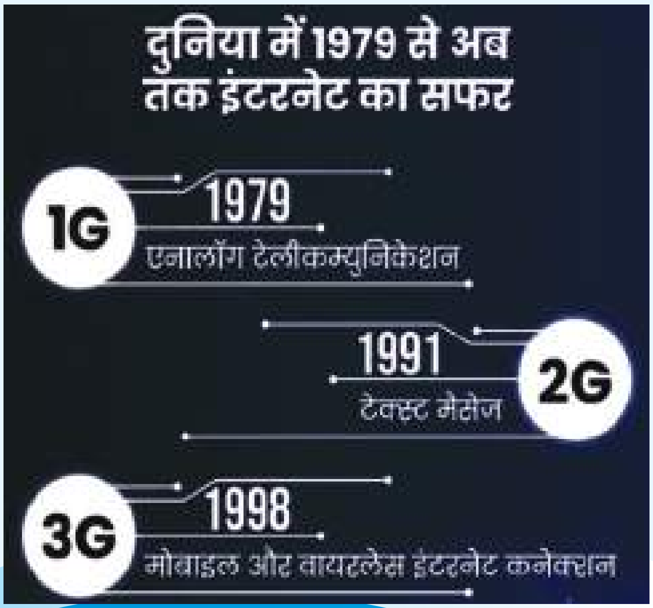

अधिक क्षमता और बहुत कम विलम्ब (देरी) की स्थिति प्रदान करेगा। 6 जी इंटरनेट का लक्ष्य एक माइक्रोसेकंड – लेटनसी संचार (संचार में एक माइक्रोसेकंड की देरी) है। यह आवृत्ति के टेराहर्ट्ज बैंड का उपयोग करेगा जो वर्तमान में दूरसंचार में अप्रयुक्त है। 6जी तक के सफर की विस्तृत जानकारी नीचे दी गई है–

1 जी नेटवर्क की शुरूआत आज से करीब 44 वर्ष पूर्व यानी 1979 में हुई। इसे पहली पीढ़ी वायरलेस तकनीक के नाम से भी पुकारा जाता है। इस तकनीक में नेटवर्क के जरिए केवल वाइस कॉल की जा सकती थी। यह एनालॉग सिग्नल पर आधारित तकनीक थी। 2जी नेटवर्क जी से अपग्रेड होकर मोबाइल नेटवर्क की दूसरी पीढ़ी यानी सेकंड जनरेशन 2जी तक पहुंची। इसका आरंभ 1991 में फिनलैंड में हुआ था। वायरलेस तकनीक में 2जी से पहली

बार डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल हुआ था। थर्ड जनरेशन यानी 3जी नेटवर्क 1998 में सामने आया। इस से डेटा की स्पीड बढ़कर 384 केबीपीएस से 2 एमबीपीएस हो गई। वायस काल के साथ वीडियो काल की सुविधा, फाइल ट्रांसफर, इंटरनेट, ऑनलाइन टीवी, वीडियो कांफ्रेंसिंग, 3डी गेमिंग, ई–मेल प्राप्त करने एवं भेजने जैसी सुविधाएं शामिल थीं। वायरलेस तकनीक में मोबाइल ब्रांड बैंड शब्द पहली बार इस्तेमाल किया गया।

4जी नेटवर्क तकनीक को सन् 2000 में विकसित किया जा चुका था, लेकिन आज से 15 वर्ष पूर्व 2007 में इस चौथी जनरेशन यानी 4जी का इस्तेमाल प्रारंभ हुआ। इसकी परीक्षण वाईमैक्स नेटवर्क पर किया गया। इसके अगले ही साल सन् 2008 में इस नेटवर्क की एलटीई तकनीक सामने आई। इसकी स्पीड भी 3जी के मुकाबले बहुत तेज है। अपलोड स्पीड 1 जीबीपीएस, जबकि डाउनलोड स्पीड 100 एमबीपीएस थी। ग्लोबल रोमिंग तकनीक को सहयोग करने के साथ ही इस तकनीक में सुरक्षा फीचर भी बेहतर है। खराब नेटवर्क में भी इसकी स्पीड 54 एमबीपीएस रहती है। 5जी नेटवर्क तकनीक को 2019 में विकसित किया गया था। इसको पाँचवी पीढ़ी के वायरलेस तकनीक के नाम से भी पुकारा जाता है। इसकी शुरुआत सबसे पहले दक्षिण कोरिया में हुई थी। इसके फायदे हैं– हाई स्पीड (>100 जीबीपीएस) और असीमित डेटा क्षमता। 6 जी नेटवर्क तकनीक सन् 2030 में विकसित होने की संभावना है। साइबोर्ग और ब्राइन कम्प्यूटर तकनीक के साथ यह हाई स्पीड (झ1 टीबीपीएस) प्रदान करेगा। यह दरअसल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स को मिलाकर बनाई जा रही है, जो कि स्वायत्त यानी कि ऑटोनॉमस तरीके से काम करने में सक्षम होगी।

6 जी की विशेषताएं हैं–

अधिक सुविधाजनक–

- 6 जी प्रौद्योगिकी बाजार से इमेजिंग, मौजूदा प्रौद्योगिकी और स्थान का पता लगाने जैसे बड़े सुधारात्मक सुविधाओं की संभावना व्यक्त की गई है।
- बेहतर प्रवाह क्षमता और उच्च डेटा दर प्रदान करने के अतिरिक्त 6जी की उच्च आवृत्तियां सर्वाधिक तेजी से नमूनाकरण दरों को सक्षम करेंगी।
- वायरलेस सेंसिंग तकनीक में उन्नति–
- डिजिटल क्षमताओं का उदय–
- बड़े पैमाने पर सार्वजनिक परिवहन का अनुकूलन–

6 जी की चुनौतियाँ हैं–

- संरक्षण तंत्र बनाए रखना–
- नए मॉडलों को अपनाना
- सेमीकंडक्टर की उपलब्धता
- वाहक तरंगों के लिए जटिल डिजाइन

6जी तकनीक की विशेषता यह होगी कि अलग–अलग तरह के नेटवर्क को खुद से समाहित कर पाने में यह समर्थ होगा। यह विशेषता वैसे तो 5 जी तकनीक में भी मौजूद होगी, लेकिन 6जी तकनीक में यह बहुत ही आसान हो जाएगी। 6 जी का नेटवर्क इस मायने में बेहद अलग

4G vs 5G vs 6G

समय के साथ बदली नेटवर्क टेक्नोलॉजी से कैसे बदले डिवाइस

नेटवर्क	स्पीड	सपोर्टेड डिवाइस
4G	33.88 Mbps	मोबाइल फोन, टैबलेट्स हॉटस्पॉट
5G	40-1,100 Mbps	मोबाइल फोन, टैबलेट्स, हॉटस्पॉट्स, पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर
6G	1 Tbps तक	ऑटोमेटेड कार, सेल्युलर सर्फेसेस, वाई-फाई इंप्लांट्स

होगा कि इसे इस बात की जानकारी होगी कि उसे प्रयोग में लाया जा रहा है। यूजर किसी खास मौके पर इसे सही तरीके से प्रयोग में ला पाएंगे। साथ ही 6 जी नेटवर्क की यह खासियत होगी कि यह अपने संसाधनों को फिर से व्यवस्थित कर सकेगा। इसे यदि और ज्यादा संसाधनों की जरुरत होगी, तो यह उसके बारे में भी बताएगा, ताकि काम में किसी तरह की बाधा उत्पन्न नहीं हो। 6 जी नेटवर्क द्वारा इसके लिए एक स्वायत्त प्रणाली विकसित की जाएगी। यह खुद से सीखने में और उचित अनुमान लगाने में सक्षम होगी। इतना ही नहीं, एक प्रभावी योजना भी विकसित करने में यह समर्थ होगी। इसमें 100 गीगाहर्ट्ज से लेकर 1 टेरा गीगाहर्ट्ज रेंज वाली उच्च फ्रीक्वेंसी की सुविधा होगी।

6जी तकनीक के इस्तेमाल के लिए हमें अपनी तैयारी शुरु देनी चाहिए, क्योंकि आभासी वातावरण के रूप में यह तकनीक बहुत जल्द हमारे सामने आ सकती है। हाल ही में केंद्रीय संचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भी भारत में 6जी के बुनियादी ढांचे के बारे में बातचीत की थी। उन्होंने बताया था कि स्वदेशी रूप से इसे हमारे यहां विकसित किया जा रहा है। इसे विकसित करने की दिशा में हमारे देश में भी तेजी से काम चल रहा है। जिस 6जी तकनीक पर इस वक्त काम चल रहा है, उसकी यह एक बड़ी विशेषता है कि यह आभासी वातावरण और मानव एवं भौतिक वातावरण को एक साथ ले आएगा। इसके लॉन्च हो जाने से निश्चित रूप से डिजिटल स्पेस में एक नई क्रांति आएगी। इसके अलावा, इंटरनेट के उपयोग का जो पारंपरिक तरीका है, वह भी काफी हद तक बदल जाएगा। 6जी तकनीक में कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग होने वाला है। साथ ही मशीन लर्निंग को भी इसमें उपयोग किया जाएगा। इस तरह से भौतिक दुनिया के साथ यह एक नई चीज जुड़ जाएगी।

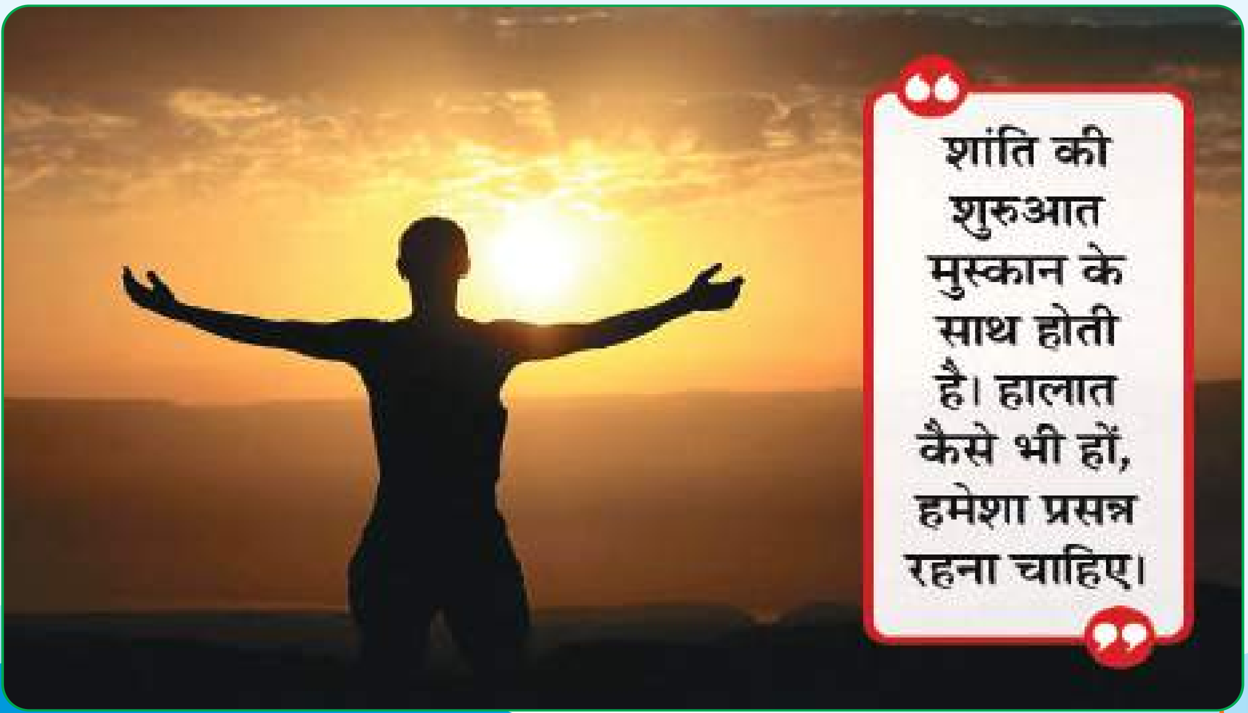

माँ गंगा

मोनिका कटारिया
पंचकुला यूनिट

माना, कि एक नदी हूँ मैं
बहती चली आ रही हूँ चिरकाल से
मेरा काम है बहना
अपनी रवानी में रहना
तुम्हारे कष्टों को हरना
पापों को धोना
लाशों को समेटना
राख को सहेजना
प्रेमपूर्वक तुम्हें अपने आगोश में लेकर
अपने में समा लेना
करती तुम पर उपकार
खोलती स्वर्ग के द्वार

मेरा वेग, मेरा अस्तित्व
शिव ना सम्भाल सके
प्रवाह छोड़ा मेरा
भू पर
जाओ, मेरे भक्तों के पाप हरो
मरने के बाद मोक्ष की प्राप्ति हो
ऐसा उन पर उपकार करो
भू लोक वासियों का उद्धार करो।

पापियों के पाप हरते–हरते
जिस्मों की राख सहेजते–सहेजते
अधजली लाशों को निगलते–निगलते
मल मूत्र की बदबू भीतर समेटते–समेटते
हे मनु पुत्र –– मैं तुम्हारी सब गंदगी समेटने लगी
मैं सिसकने लगी।

मेरे अलौकिक रूप को तुमने
अपने पापों से इतना मैला कर दिया
मेरे होने का वजूद बदल गया
मेरा जल तुम्हारे लिए मुक्ति का द्वार है
मैं तारणी हूँ तुम्हारी, मेरा तुम पर उपकार है
तुम मृत्यु लोक के प्राणी, मैं क्षीर सागर वासिनी
हे पृथ्वी लोक वासी ––तुम्हें दे रही चेतावनी
मेरी साँसे घोंट कर, तुम कहाँ रहोगे जिंदा
तुमको चेता रही, तुम्हारी माँ गंगा।

सोशल मीडिया-रोशन होता हिंदी का दिया

लीना मौंदेकर
सी.आर.एल. बेंगलूरु

चेहरे का हर भाव, दिखावट सा लगता है
असल जिंदगी भी अब मिलावट सा लगता है
सोशल मीडिया का असर कहे हम इसे,
अपनों के रिश्तों में भी मिलावट सा लगता है
मनुष्य कहने को सामाजिक प्राणी
फंस चुका है सोशल के तारों में,
परिवार होते हुए भी, चाहिए फॉलोअर सोशल मीडिया में,
अपनों के रिश्तों में भी भारी गिरावट सा लगता है
खुद को अच्छा दिखा कर, तारीफ चाहिए सोशल मीडिया में,
समक्ष लोगों से अपनी तारीफ सुनना, कहावत सा लगता है।
न जाने कौन सी मृग तृष्णा है, जो किसी कल्पना से परे है,
जो किताबों में नहीं, वो सोशल मीडिया पर मिले हैं।
कहां खो गए है, वो सच और झूठ का दर्पण,
क्योंकि आज सब कुछ बनावटी सा लगता है
भाषा तो संचार का माध्यम है,
संचार की मुख्य कड़ी है सोशल मीडिया,
जो न चाहते हुए भी हम पर हावी हो गई।
दैनिक गतिविधियों से लेकर परंपरा
हमारे निजी जीवन तक नहीं छोड़ा।
हिंदी जो जन–जन की भाषा है,
जन से जुड़ी, जन तक पहुंची,
तार बन रहा है सोशल मीडिया,
भाषा ने अपना रूप दिखाया,
सोशल मीडिया पर हिंदी बोली गई,
लिखी भी गई, और संचारित भी हुई।
हिंदी की वजह से जन–जन साथ जुड़े, क्योंकि हिंदी अधिकतर बोली और समझी जाने वाली भाषा है,
जो जन मानस की भाषा के साथ ही, सोशल मीडिया की एक भाषा बन गई,
जो जन से जुड़ कर, जन की अपनाती है,
जन का साथ देकर, जन में ही निहित हो जाती है।
कहने को भावों से भरे शब्दों का आदान–प्रदान है,
पर भाषा के साथ जुड़ कर और भी सुसज्जित हो जाती है,
अब तो हिंदी भाषा हर जगह व्याप्त सी लगती है।

वर्ग पहेली

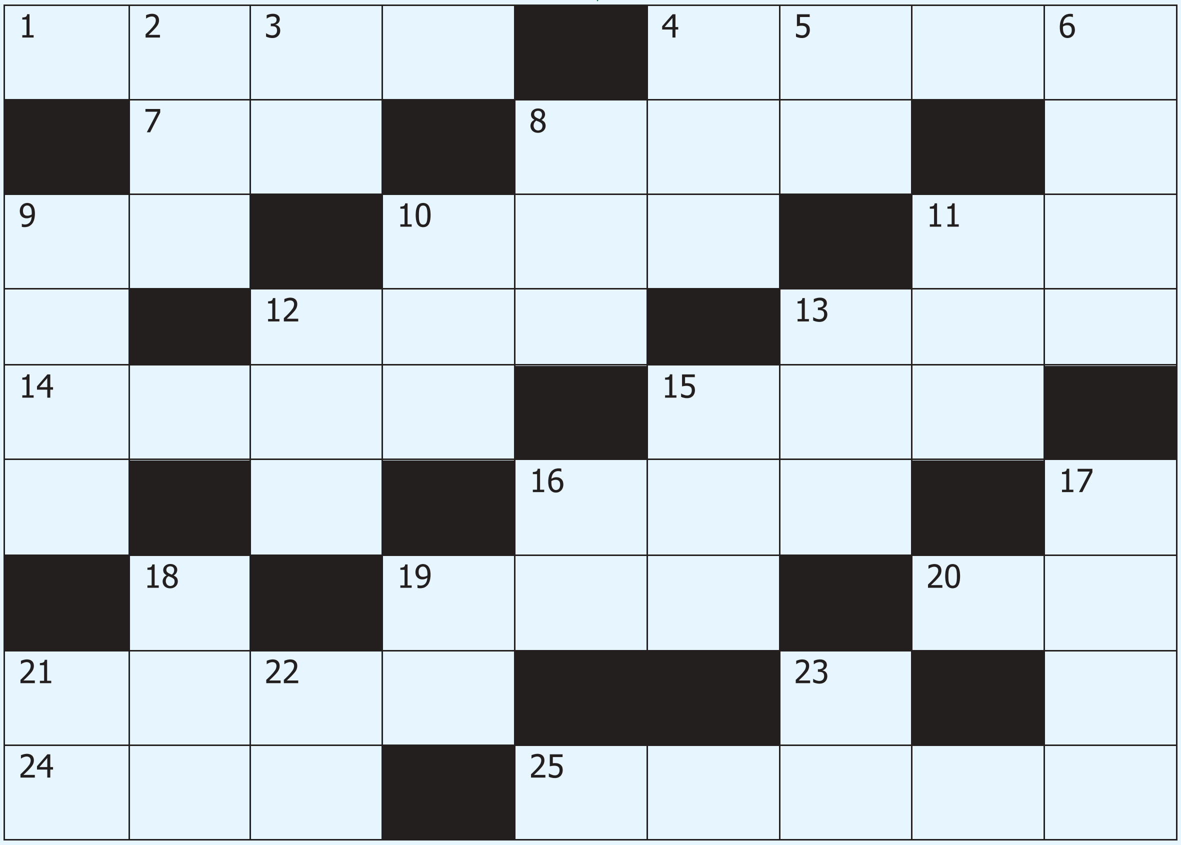

बाएं से दाएं .....

1. भागना, अन्यत्र चले जाना (4), 4. भाग्य, किस्मत (4), 7. चमड़ी, खाल (2), 8. अफसोस (3), 9. शिव, प्रत्येक (2), 10. संहार, सर्वनाश, तबाही (3), 11. लीन, आसक्त (2), 12. द्रव का ठोस रूप धारण करना, दृढ़तापूर्वक स्थित होना (3), 13. बिचौलिया, मध्यस्थ (3), 14. चमत्कार, करिश्मा (4), 15. बर्दाश्त करना (3), 16. फौजियों को दिया जाने वाला समादेश, (3), 19. प्रस्थान (3), 20. दुख, मार्गदर्शक, धर्मगुरू, दर्द (2), 21. बेवजह, बिना कारण (4), 24. वर्ष, साल (3), 25.अंततोगत्वा, अंततरू (5)

ऊपर से नीचे.....

2. बेबस, मजबूर, विवश (3), 3. मृत्यु का देवता (2), 4. खोज (3), 5. आने वाला व बीता हुआ दिन (2), 6. पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छठा लोक (4), 8. राजी करना (3), 9. गतिविधि, चेष्टा, हिलना–डोलना (4), 10. दुर्विचार, बुरे विचार वाला (3), 11. मिलाना (3), 12. दुनिया, संसार (3), 13. जलाना, दग्ध करना (3), 15. बराबर, एकसा (3), 16. अल्प, थोड़ा (2), 17. शासन का मूर्तरूप, हुकूमत (4), 18. दोष, बुराई, ऐब (3), 19. समूह, संघ, दूत (2), 21. इस समय, इस क्षण (2), 22. स्वाद, जलीय अंश (2), 23, गीला, नम, आर्द्र (2)

राजभाषा गतिविधियां

बीईएल कार्पोरेट कार्यालय

हिंदी माह के पहले कार्य दिवस सीएमडी महोदय द्वारा जारी संदेश का परिचालन किया गया और मानक द्विभाषी ईमेल का संकलन सभी कार्यपालकों को और कर्मचारियों को परिचालित किया गया। पूरे माह के दौरान स्वागत कक्ष में देश की महान विभूतियों द्वारा राजभाषा हिंदी में कहे गए विचार प्रदर्शित किए गए। पूरे माह कैन्टीन में भोजन अवधि के दौरान देशभक्ति गीतों का प्रसारण किया गया। हिंदी माह का बैनर प्रदर्शित किया गया। माह के पहले दिन कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के लिए सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें निदेशक (मानव संसाधन) सहित 12 उच्चाधिकारियों ने भाग लिया।

अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए पीसी पर की–इन करना, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी–कन्नड़ संगम, प्रश्नोत्तरी और अंताक्षरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी का प्रचार–प्रसार कार्यालय से बाहर भी हो, इसलिए एक प्रतियोगिता (ऑनलाइन अंताक्षरी) कर्मचारियों के परिजनों के लिए और एक प्रतियोगिता (निबंध लेखन) कोडिगेहल्ली सरकार स्कूल के कक्षा 9वीं और 10वीं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई।

इन प्रतियोगिताओं में कुल 92 अधिकारियों / कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया जिसमें से 39 लोगों ने पुरस्कार प्राप्त किए। जिन प्रतिभागियों को कोई पुरस्कार नहीं मिला, उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिभागिता पुरस्कार भी वितरित किए गए। इसके अलावा, दो प्रतियोगिताओं में कार्पोरेट कार्यालय के प्रशिक्षु और संविदा कार्मिकों को भी शामिल किया गया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

14 सितंबर को कार्पोरेट कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में माननीय गृह मंत्री और रक्षा मंत्री जी के संदेश पढ़े गए और वर्ष 2022–23 के दौरान मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। 28 सितंबर, 2023 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती शशि बाला श्रीवास्तव, आईडीएएस, पीसीडीए, बेंगलूरु मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थीं। पुरस्कार वितरण मंचासीन मुख्य अतिथि, सीएमडी, निदेशक (मानव संसाधन), निदेशक (वित्त), निदेशक (अनु. व वि.) और सीवीओ द्वारा किया गया। 29 सितंबर, 2023 को सीएमडी की अध्यक्षता में कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण

दिनांक 28.04.2023 को संसदीय राजभाषा की पहली उप समिति द्वारा कोलकाता में क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता का राजभाषाई निरीक्षण संपन्न हुआ। समिति ने निरीक्षणाधीन कार्यालय और बी ई एल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर संतोष व्यक्त किया। समिति की ओर से उपाध्यक्ष, संयोजक सहित चार सांसद, रक्षा मंत्रालय के अधिकारीगण, बी ई एल के सी एम डी, निदेशक (आर एंड डी), उच्चाधिकारीगण और राजभाषा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

दिनांक 06.05.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा ऋषिकेश में हमारी कोटद्वार यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण संपन्न हुआ। समिति ने निरीक्षणाधीन कार्यालय और बी ई एल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर संतोष व्यक्त किया। निरीक्षण बैठक में समिति के संयोजक सहित दो सांसद, रक्षा मंत्रालय के अधिकारीगण, बीईएल के सी एम डी, निदेशक (आर एंड डी), उच्चाधिकारीगण और राजभाषा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

दिनांक 11.07.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा विशाखापत्तनम में हमारी मचिलीपटनम स्थित यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण संपन्न हुआ। समिति ने निरीक्षणाधीन कार्यालय और बी ई एल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर संतोष व्यक्त किया। निरीक्षण बैठक में समिति के उपाध्यक्ष, संयोजक सहित पांच सांसद, रक्षा मंत्रालय के अधिकारीगण, बी ई एल के सी एम डी और निदेशक (मा.सं), उच्चाधिकारीगण और राजभाषा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

पुरस्कार / सम्मान

पुणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री ने बीईएल को वर्ष 2022–23 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ('ग' क्षेत्र) प्रदान किया

नराकास (उपक्रम) के संयोजक कार्यालय एचएएल मुख्यालय के तत्वावधान में आयोजित पहली अर्धवार्षिक बैठक में बीईएल कार्पोरेट कार्यालय को वर्ष 2022–23 में बेंगलूरु स्थित पीएसयू में सर्वोत्तम राजभाषा कार्यान्वयन का पुरस्कार प्रदान किया गया।

बेंगलूरु कॉम्प्लेक्स

वर्ष 2022–2023 के लिए मूल रूप में हिंदी में कार्य करने की प्रोत्साहन योजना के तहत कुल 204 अधिकारी / कर्मचारी पुरस्कृत हुए।

दिनांक 17.07.2023 को पुराने पी आर सम्मेलन कक्ष में अपराह्न 02.00 बजे प्रबोध, प्राज्ञ व पारंगत कक्षाओं का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया।

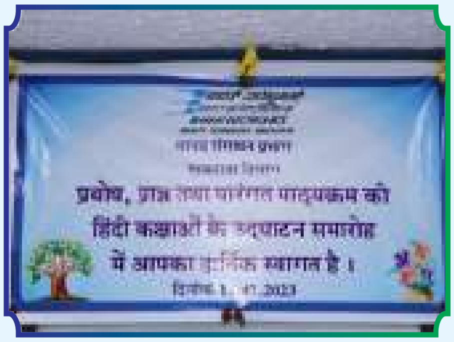

हिंदी माह समारोह के सुचारू आयोजन हेतु बी.ई.एल. बेंगलूरु संकुल में हिंदी माह आयोजन समिति गठित की गई। समिति के अध्यक्ष श्री सुरेश माईकल, अ.म.प्र.(मा.सं.) के मार्गदर्शन में 04.09.2023 से 07.09.2022 तक पाँच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें खोजो तो जानें– "गुप्तगामिनी", गायन– "सुर सरिता", शब्द ज्ञान (ऑनलाइन)– "शब्द शरावती भाषण–"भाषा भागीरथी" तथा हिंदी लिखित प्रश्नोत्तरी – "ज्ञान गंगा" प्रतियोगिताएं शामिल थी। इसके अतिरिक्त दिनांक 25.09.2022 को शीर्ष राभाकास समिति के सदस्यों के लिए विशेष रूप से "भारतेंदु हरिश्चंद्र" प्रतियोगिता आयोजित की गई।

चेन्नै यूनिट

हिंदी माह के कार्यक्रमों की शुरुआत सीएमडी महोदय के संदेश को पढ़ने के साथ किया गया। यूनिट में दिनांक 14 सितम्बर, 2023 को हिंदी दिवस समारोह के दौरान माननीय गृह मंत्री और माननीय रक्षा मंत्री के संदेश पढ़े गए। हिंदी माह 2023 के दौरान कार्यालय में स्थायी कर्मचारियों हेतु कुल 07 हिंदी प्रतियोगिताएँ निबंध लेखन, देवनागरी लिपि, अनुवाद, कार्यालयीन शब्दावली, हिंदी वाक्य बनाना, हिंदी शब्द चयन एवं हिंदी हस्त लेखन आयोजित किए गए। इस वर्ष कार्यालय में संविदा कर्मियों के लिए भी कुल 03 हिंदी प्रतियोगिताएं वाक्य संरचना, देवनागरी लिपि एवं प्रशासनिक शब्दावली आयोजित किए गए। हिंदी माह 2023 के दौरान कुल 10 हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें कुल 107 कर्मचारियों ने भाग लिया।

सितंबर 2023 के हिंदी माह समापन समारोह कार्यक्रम पर यूनिट प्रमुख व महाप्रबंधक श्री. जी.एल. पेड्रो, मुख्य अतिथि श्री. एम.पी. दामोदरन, उप निदेशक (दक्षिण), हिंदी शिक्षण योजना, सभी विभागीय प्रमुख, समिति सदस्य एवं पुरस्कार विजेतागण।

हैदराबाद यूनिट

हिंदी दिवस के अवसर पर दि.14.09.2023 को 'व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों पर निवारक उपाय' विषय पर डॉ. के तेजा, ऑस्टियोपैत एवं कैरोप्रैटिक द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में 50 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं माननीय गृह मंत्री जी के संदेशों को पढ़ा गया।

हिंदी माह समापन कार्यक्रम – दि.29.09.2023 को मुख्य अतिथि लेफ्टिनेंट कर्नल अक्षय पांडे, उप नियंत्रक, सीक्यूए (ईडबल्यु), सिकंदराबाद एवं महाप्रबंधक श्री निखिल कुमार जैन, प्रभारी महाप्रबंधक की उपस्थिति में हिंदी माह समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 65 कर्मचारियों ने भाग लिया। राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा गतिविधियों से कर्मचारियों को अवगत कराया और हिंदी माह कार्यक्रमों का ब्योरा दिया। कर्मचारियों को संबोधित करते हुए प्रभारी महाप्रबंधक ने राजभाषा कार्यान्वयन प्रयासों की सराहना की और पुरस्कार ग्रहीताओं को बधाई दी। इसी उत्साह के साथ वे साल–भर के लिए भी हिंदी काम–काज में अपना योगदान बनाए रखने के लिए उन्होंने सभी को प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि ने हिंदी कार्यक्रमों के प्रतिभागियों को हार्दिक अभिनंदन प्रकट किया। मुख्य अतिथि एवं प्रभारी महाप्रबंधक द्वारा हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता एवं पुरस्कार /प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयन किए गए कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। व.उ.म.प्र(मा.सं.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कर्मचारियों द्वारा मूल रूप से हिंदी में काम के लिए निर्धारण समिति द्वारा संबंधित कार्यालय आदेश में दिए गए दिशा–निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन के लिए 34 कर्मचारियों से आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से अर्हता प्राप्त 02 कर्मचारियों को प्रेमचंद पुरस्कार, 25 को जयशंकर पुरस्कार और 04 को विशेष सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों के बच्चों को हिंदी विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए देय पुरस्कार के अंतर्गत यूनिट में 02 कर्मचारियों के बच्चों को मैथिलीशरण पुरस्कार एवं 01 कर्मचारी के बच्चे को विशेष सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुए। पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र हिंदी माह समापन समारोह के दौरान वितरित किए गए।

सीआरएल, बेंगलूरु

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा–निर्देशों का अनुपालन करते हुए केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, बेंगलूर में हिंदी माह समारोह–2023 का आयोजन किया गया। सितंबर माह, 2023 के पहले कार्य दिवस से ही हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु एवं कार्यपालकों में हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए गृह मंत्रालय द्वारा जारी हिंदी सूक्तियों की स्टैंडी और हिंदी माह के बैनर लगाए गए। हिंदी माह के उपलक्ष्य पर सीएमडी महोदय द्वारा जारी संदेश का परिचालन किया गया और हिंदी माह आयोजन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें माह के दौरान आयोजित की जाने वाली गतिविधियों पर चर्चा हुई। हिंदी माह के दौरान सीआरएल के कार्यपालकों के लिए तस्वीर क्या कहती है?, वार्तालाप, वाद–विवाद, सरल अनुवाद एवं प्रशासनिक शब्दावली और अंत्याक्षरी प्रश्नोत्तरी कुल 6 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इसके साथ ही प्रशिक्षुओं और संविदा कर्मचारियों के लिए भी कविता वाचन और सुलेख दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, बेंगलूर में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की प्रगति का जायजा लेने के लिए दि. 12.06.2023 रक्षा मंत्रालय, रक्षा उत्पादन विभाग के अधिकारीगण श्री मनोज कुमार चौधरी, सहायक निर्देशक (राजभाषा) और श्री काले खां, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय-वैजाग

क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्नम में हिंदी दिवस और हिंदी माह का आयोजन किया गया जिसके तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कप्तान स्टीफन रंजन पुरस्कार वितरण समारोह मे मुख्य अतिथि थे। पुरस्कार वितरण के पश्चात सभी को हिंदी मे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता

दिनांक 01 सितंबर 2023 को हिंदी माह उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यालय के मुख्य द्वार पर हिंदी माह समारोह का बैनर प्रदर्शित किया गया और कार्यालय के प्रमुख स्थलों पर महान व्यक्तियों की हिंदी से संबंधित प्रेरणादायी सूक्तियों को प्रदर्शित किया गया। दिनांक 14 सितंबर 2023 को "हिंदी दिवस" मनाया गया। श्री मानस रंजन मिश्रा जी ने मंगलदीप प्रज्वलित कर हिंदी दिवस का शुभारंभ किया। इसके पश्चात रक्षा मंत्री एवं गृह मंत्री के संदेशों का पाठ किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख ने राजभाषा नीतियों पर जागरूकता के लिए विशेष व्याख्यान किया। कार्यालय प्रमुख ने हिंदी में किए जा रहे सरकारी कामकाज पर विस्तार से चर्चा की और अधिक से अधिक कार्य को हिंदी में करने के लिए सभी सदस्यों को प्रोत्साहित किया। हिंदी माह के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी में निबंध, अंग्रेजी से हिंदी एवं हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद, हिंदी नारा और हिंदी की–इन प्रतियोगिताएं शामिल है। दिनांक 29.09.2023 को हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के आयोजन की विवेचना की गई एवं कार्यालय अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया।

पुणे यूनिट

पुणे यूनिट में दि.01.09.2023 से दि.30.09.2023 तक 'हिंदी माह' समारोह का आयोजन किया गया। दि.14.09.2023 को "हिंदी दिवस" समारोह मनाया गया। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए (1)निबंध (2) हिंदी नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग (3) राजभाषा ज्ञान व अनुवाद कौशल (4) भाषण (5) हिंदी कार्य निष्पादन (6) प्रबंधक तथा उनसे ऊपर के उच्चाधिकारियों के लिए राजभाषा ज्ञान व नीति (7) संविदा लिपिक तथा अप्रेंटिसेस के लिए राजभाषा ज्ञान (8) कर्मचारियों के परिजनों हेतु निबंध (9) स्कूली छात्रों के लिए व्यवहारिक हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में कुल–221 प्रतिभागियों ने भाग लिया, 51 प्रतिभागी पुरस्कृत किए गए तथा 170 को प्रतिभागिता पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास, पुणे के तत्वावधान में पुणे यूनिट द्वारा दि. 20.04.2023 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिता में विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों / बैंकों / पीएसयू से लगभग 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उक्त प्रतियोगिता में 05 प्रतिभागी पुरस्कृत किए गए। इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम सदस्य सचिव नराकास श्रीमती स्वाती चढ्ढा का वरि. सुरक्षा अधिकारी, श्री रवि रंजन द्वारा पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आनंद एस, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.व प्रशा.) द्वारा की गई। निर्णायक मंडल में रा.भा.का.स के सदस्य श्री एस.के मोदी, वरि. उप महाप्रबंधक (गुणता), सतर्कता अधिकारी, श्री ए. आर.पुरंदरे तथा श्री प्रशांत कुमार, उप महाप्रबंधक (क्रय) थे। इस अवसर पर सदस्य सचिव नराकास श्रीमती स्वाती चढ्ढा तथा श्री आनंद एस, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.व प्रशा.) द्वारा प्रतिभागियों को संबोधित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्री बी.एम.एस.रावत द्वारा किया गया।

दि.14.09.2023 एवं दि.15.09.2023 को पुणे में आयोजित "तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन" में यूनिट से सहायक प्रबंधक (राजभाषा) सहित 2 अधिकारियों तथा 4 कर्मचारियों ने प्रतिभागी, प्रोटोकॉल अधिकारी तथा स्वयं सेवकों के रूप में भाग लिया। हमारे संस्थान द्वारा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सहयोग हेतु नराकास, पुणे को विशेष अंशदान के तौर पर रू.15000/– (रुपये पंद्रह हजार मात्र) की सहयोग राशि भी प्रदान की गई। इसके अलावा दि.24.04.2023 को "भारत मौसम विज्ञान विभाग", शिवाजी नगर, पुणे द्वारा "स्वरचित काव्यपाठ प्रतियोगिता" आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में यूनिट की ओर से 2 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्रीमती दीपाली एस.राव, वरिष्ठ सहायक अभियंता, लेजर सिस्टम विभाग ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

क्षेत्रीय कार्यालय-मुंबई

दिनांक 14.09.2023 को हिंदी दिवस के अवसर पर राभाकास अध्यक्ष, सुश्री अनीता भद्रा, उप महाप्रबंधक, क्षेत्रीय, कार्यालय, मुंबई ने हिंदी दिवस पर गृह मंत्री व रक्षा मंत्री से प्राप्त संदेश पढ़े एवं सभी कर्मचारी को हिंदी में अधिकतम कार्य करने हेतु प्रेरित किया। क्षे.का. मुंबई की ओर से श्री. नितिन पाटील, नामित राजभाषा अधिकारी तथा श्री प्रसन्न कुमार जाधव, सहायक अभियंता, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित, तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे (14–15 सितंबर, 2023) में भाग लिया। सुश्री अनीता भद्रा, उप महाप्रबंधक, क्षेत्रीय, कार्यालय, मुंबई द्वारा "कार्यालयीन कामकाज में सहज, सरल और सुगम हिंदी का प्रयोग आज की मांग" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। सदस्य सचिव, श्री नितीन पाटील ने हिंदी माह समारोह के सभी कार्यक्रमों का संचालय तथा सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

कोटद्वार यूनिट

हिंदी माह का प्रारम्भ यूनिट के प्रमुख स्थलों पर हिंदी प्रचार प्रसार संबंधी बैनर लगाने से हुआ। इसके उपरांत माह भर में कर्मचारियों हेतु कुल 07 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दि. 14.09.2023 को यूनिट में 'हिंदी दिवस' का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ श्री दिनेश कुमार गुप्ता, अपर महाप्रबंधक (विकास एवं अभियांत्रिकी) द्वारा किया गया। उन्होंने सरल हिंदी के प्रयोग के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। तत्पश्चात अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, माननीय गृहमंत्री एवं रक्षा मंत्री के हिंदी दिवस पर प्रेषित संदेशों का वाचन किया गया। उच्चाधिकारियों हेतु राजभाषा जागरूकता प्रतियोगिता का भी आयोजन हिंदी दिवस पर किया गया। दिनांक 29.09.2023 को 'हिंदी माह' समापन समारोह का आयोजन हुआ। श्रीमती माधुरी रावत, वरिष्ठ सहायक राजभाषा अधिकारी द्वारा यूनिट में अब तक की राजभाषा संबंधी उपलब्धियों का विवरण दिया गया। श्री विश्वेश्वर पुच्चा, महाप्रबंधक (कोट) द्वारा कुमारी श्रेया तिवारी को कक्षा 10 के स्तर पर हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर मैथिलीशरण पुरस्कार प्रदान किया गया। अपना सम्पूर्ण कार्य हिंदी में करने के लिए श्रीमती कमलेश कुकरेती, वरिष्ठ सहायक अधिकारी को तुलसीदास पुरस्कार प्रदान किया गया तथा श्री हरिकेश कुमार, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक (संचालन) को कबीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महाप्रबंधक महोदय ने वर्ष भर हिंदी कार्यान्वयन के लिए अभियांत्रिकी सेवाएं विभाग को महाप्रबधक चल वैजयंती से सम्मानित किया।

पंचकूला यूनिट

हिंदी माह की शुरुआत 1 सितंबर, 2023 से हुई। अगस्त के अंतिम सप्ताह में विशेष बैठक बुलाई गई। इस बैठक में हिंदी माह–2023 की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा हुई एवं प्रतियोगिताओं के आयोजन संबंधी निर्णय लिया गया। साथ ही कॉरपोरेट कार्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसार निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके तहत सेंट्रल डिस्प्ले प्रणाली पर पूरे माह यूनिट में आयोजित होने वाली हिंदी माह प्रतियोगिताओं की सूचना व राजभाषा हिंदी के विषय में महान हस्तियों के विचारों की विस्तृत पीपीटी बनाकर प्रदर्शित की गई।

कुल 7 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा राजभाषा के कार्यान्वयन में सहयोग हेतु संकल्प व्यक्त किया। श्रीमती प्रभा गोयल, महाप्रबंधक, पंचकूला यूनिट की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2023 को हिंदी दिवस मनाया गया। महाप्रबंधक महोदया ने पंचकूला यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को उत्कृष्ट बनाने का संकल्प लिया और भारत सरकार की राजभाषा नीति व नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं की महत्ता पर अपने विचार रखते हुए कहा कि मातृभाषा में अपने विचारों की अभिव्यक्ति बहुत ही सरलतम रूप से होती है। संपूर्ण हिंदी माह के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में कुल 224 कर्मचारियों (120 कार्यपालक एवं 104 गैर कार्यपालक) की प्रतिभागिता रही। समापन समारोह की अध्यक्षता यूनिट की महाप्रबंधक महोदया श्रीमती प्रभा गोयल ने की। इस अवसर पर उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री अनीश चौहान ने हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं व कार्यक्रमों में बढ़–चढ़ कर भाग लेने हेतु प्रतिभागियों का शुक्रिया अदा किया व आगे भी इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा प्रकट की।

गाजियाबाद यूनिट

भारत सरकार व कार्पोरेट ऑफिस के दिशा निर्दशों के अनुसार गाजियाबाद यूनिट में हिंदी माह व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर / हार्ड बोर्ड यूनिट / एसबीयूओं में प्रमुख स्थलों पर लगाए गए। यूनिट में 14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में सुश्री नवजोत पीटर, राजभाषा अधिकारी व सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा श्री शंकरसुब्रमणियन आर, कार्यपालक निदेशक (रेडार) व यूनिट प्रमुख, श्री नवीन कुमार, महाप्रबंधक प्रभारी (एन्टेना), वरिष्ठ अधिकारीगण व श्रमिक संगठन / एसोसिएशन के प्रतिनिधिगणों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का आरंभ बीईएल गीत से किया गया, जिसके उपरांत यूनिट प्रमुख व सभी एसबीयू प्रमुखों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उदघाटन किया गया। इसके बाद राजभाषा/मानव संसाधन कार्मिकों द्वारा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक प्रभारी श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव, माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह और माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़े गए। तत्पश्चात हिंदी आधारित एक विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसे सभी उपस्थितगणों द्वारा खूब सराहा गया।

हिंदी माह 2023 के दौरान कार्पोरेट के दिशा निर्देशों के अनुसार वरिष्ठ अधिकारियों व हिंदीतर भाषा–भाषियों समेत सभी कर्मचारियों के लिए कुल बारह प्रतियोगिताएं राजभाषा ज्ञान (हिंदीतर भाषा भाषियों के लिए), अनुवाद, निबंध लेखन, पुस्तक प्रस्तुति, काव्य पाठ, डैम शेराज, आशु भाषण, अंत्याक्षरी, कम्पयूटर प्रतियोगिता, पोस्टर, स्लोगन व लेख प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अंत्याक्षरी प्रतियोगिता तथा डैम शेराज प्रतियोगिता में कर्मचारियों/अधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

28 सितंबर, 2023 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें राभाकास अध्यक्ष व यूनिट प्रमुख द्वारा माखन लाल पुरस्कार व मैथिलीशरण पुरस्कार विजयी मेधावी बच्चों सहित सभी प्रोत्साहन पुरस्कार व हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कारों के प्रमाणपत्र वितरित किए गए। अंत में राजभाषा अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों, कर्मचारियों, हिंदी माह आयोजन समिति के सदस्य व वरिष्ठ अधिकारियों को हिंदी माह को सफलता पूर्वक सफल बनाने हेतु उनके सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया।

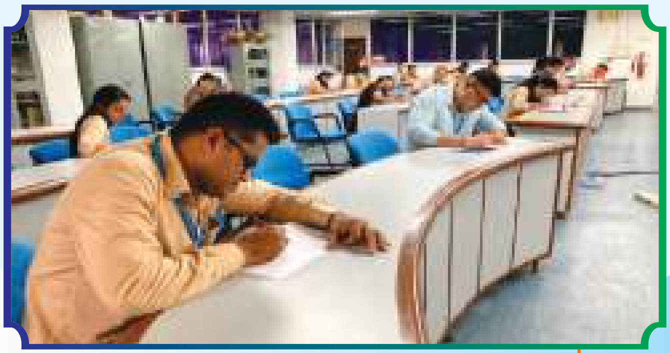

सीआरएल गाजियाबाद

भारत सरकार व कार्पोरेट ऑफिस के दिशा निर्देशों के अनुसार सीआरएल में हिंदी माह व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्ड सीआरएल में प्रमुख स्थलों पर लगाए गए। कार्यक्रम का आरंभ बीईएल गीत से किया गया, जिसके उपरांत मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगणों द्वारा दीप प्रज्वलित किया। इसके बाद कार्मिकों द्वारा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह और माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़े गए। कार्यक्रम के अंत में मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय ने राजभाषा व मानव संसाधन विभाग द्वारा हिंदी के उत्थान हेतु किया जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा उपस्थित सभी अधिकारियों व प्रतिनिधियों को अपना कार्यालयीन कार्य 100% हिंदी में करने का अनुरोध किया। कार्यक्रम के अंत में सुश्री नवजोत पीटर द्वारा सभी को अवगत कराया गया कि कार्पोरेट के दिशा निर्देशों के अनुसार हिंदी माह 2023 के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों व हिंदीतर भाषा–भाषियों समेत सभी कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं संवाद, काव्यपाठ, अनुवाद, निबंध लेखन, अंत्याक्षरी, लेख/कहानी आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अंत्याक्षरी तथा काव्यपाठ प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

30 सितम्बर, 2023 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें राभाकास अध्यक्ष मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार व हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कारों के प्रमाणपत्र वितरित किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह के अंत में मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय ने सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों व पुरस्कार विजेताओं को संबोधित किया। उन्होंने सभी कर्मचारियों व कार्मिकों को राजभाषा संबंधित संवैधानिक प्रावधानों व राजभाषा नीति–नियमों का पालन करते हुए हिंदी में कार्य करने हेतु अनुरोध किया। मुख्य वैज्ञानिक ने सभी विजेताओं व प्रतिभागियों को बधाई दी व राजभाषा / मानव संसाधन विभाग द्वारा हिंदी माह को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने पर प्रशंसा व्यक्त की। अंत में राजभाषा अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों, कर्मचारियों, हिंदी माह आयोजन समिति के सदस्य व वरिष्ठ अधिकारियों को धन्यवाद प्रस्तुत किया।

जीवन में शौक भी जरूरी है...

बेंगलुरु स्थित मंगला रश्मि के घर में कदम रखते ही आपकी नजर तरह–तरह के छोटी–बड़ी की–चेन से सजी उनके बैठक कक्ष की दीवार पर ठहर जाएगी और आप बाकी सब भूलकर टकटकी लगाए दीवार के तीन कोनों को देखते रह जाएंगे। की–चेन का उनका विशाल संग्रह लिविंग रूम की पूरी दीवार पर एक बड़े लकड़ी के शोकेस पर सजा हुआ है। रश्मि की–चेन की शौकीन हैं जिन्हें अंग्रेजी में कोपोक्लेफिलिस्ट कहा जाता है। आज उनके पास की–चेन का विशाल संग्रह है जो दिन–ब–दिन बढ़ते जा रहा है। उन्होंने बताया कि उनका यह शौक तब शुरू हुआ जब वे मेंगलूरु के कॉलेज में पढ़ा करती थीं। अनोखे की–चेन देखते ही उनकी नजर ठहर जाती थी और उन्हें अपना बना लेती थीं। यह शौक धीरे–धीरे बढ़ता गया और बेंगलुरु आने के बाद यह जुनून बन गया। आज (नवंबर, 2023 तक) उनके घर में 1500 से अधिक कीचेन का आकर्षक संग्रह है। उनके इस शौक और संग्रह के बारे में जो दोस्त और रिश्तेदार जानते हैं, वे दूर–दराज से न केवल इसे देखने आते हैं, बल्कि उनके लिए एक–दो की–चेन भी तोहफे में जरूर साथ लेकर आते हैं।

उनके इस संग्रह में कार्टून चरित्र, फल–फूल, वर्णमाला के अक्षर, बंदूकें, गोलियां, तलवारें, जानवर, प्रसिद्ध कहानियों के पात्र, लकड़ी की चाबी की जंजीरें, खेल–कूद के सामान, खिलौने, जूते–चप्पल, परिधान के सामान, उद्यान उपकरण, हैंगिंग, क्रॉस, चिड़ियाघर, किंडरजॉय खिलौने, गुड्डे–गुड़िया, वाद्ययंत्र, बाइक और कार, हवाई जहाज, कंकाल, आदि एक से बढ़कर एक की–चेन हैं। वे कहती हैं कि वैसे तो उन्हें ये सभी की–चेन पसंद हैं लेकिन तरह–तरह की बंदूकें उनकी पसंदीदा हैं। वे कहती हैं कि सुबह दफ्तर जाने से पहले और शाम को दफ्तर से आने के बाद जब उनकी नजर इन पर पड़ती है तो उन्हें बड़ी खुशी होती है। सालों बाद भी उनका यह जुनून कम होने का नाम नहीं ले रहा है बल्कि बढ़ते ही जा रहा है। उनका यह संग्रह यूं ही बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब किसी न किसी राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उन्हें सराहा जाएगा। संप्रति वे उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन), कार्पोरेट कार्यालय में पदस्थ हैं।

" ದಾಸನಾಗು ನೀ ದಾಸನಾಗು "

रवि कुमार
कॉर्पोरेट कार्यालय

ಅತಿಬುದ್ಧಿವಂತ ನಾನೆಂದುಕೊಂಡೆ
ಅಲ್ಪಜ್ಞಾನವನ್ನೇ ಪಾಂಡಿತ್ಯವೆಂದೆ ,
ಬಂದದಾರಿಯನು ಮರೆತು-ಮೆರೆದೆ
ಬೆಳೆಸಿದವರ ನಾ ಒದ್ದು-ಸಾಗಿದೆ ||

ಸರಿಸಾಟಿಯಿಲ್ಲದ ಶಿಖರವನ್ನೇರಿದೆ
ಹಣದ ಹೊಳೆಯ ಉಗಮನಾದೆ,
ಮದದ-ಅರಮನೆ ನನ್ನ ಸ್ವತ್ತು
ಸೊಕ್ಕಿನ ತೈಲಅದಕೆ ಬೆಳಕು ||

ದೈವದ ಬಿರುಗಾಳಿ ಬೀಸಿತೊಮ್ಮೆ
ಶಿಖರ ನಲುಗಿತು– ಹೊಳಪು ಮಾಸಿತು,
"ನಾನು-ನನ್ನದು" ಉರಿದುಆರಿತು
ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಮೊರೆಯಿಟ್ಟ – ಬುದ್ಧನಾದ ||
" ಕಲಿತಿದ್ದು ಅಲ್ಪ ಇಹುದು ಹಿಮಾಲಯ
ತಿಳಿದಿದೆ ಸಲ್ಪ ಉಳಿದಿದೆ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ,
ಪಡೆಯುತ ಅಹಂ ಗೆ ಚುಚ್ಚುಮದ್ದು
ಜಗಕಲ್ಯಾಣಕೆ ಭಕ್ತಿಲಿ ನಿಂತ ಎದ್ದು ||

आइए, हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

आश्चर्यजनक !	ಆಶ್ಚರ್ಯಕರ !	आश्चर्यकरा !
शाबाश ! बहुत अच्छे!	ಶಭಾಷ್ / ಭೇಷ್ / ತುಂಬಾ ಚೆನ್ನಾಗಿದೆ!	शभाष् / भेष् / तुंबा चेन्नागित्तु !
आपका काम काबिले–तारीफ / प्रशंसा के योग्य है।	ನಿನ್ನ ಕೆಲಸ ಶ್ಲಾಘನೀಯ / ಪ್ರಶಂಸಾರ್ಹ!	निन्न केलसा श्लाघनीय /प्रशंसार्ह ।
यह तो तुमने बड़ी बहादुरी का काम किया।	ನೀನು ತುಂಬಾ ಧೈರ್ಯಶಾಲಿಯಾಗಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿದೆ.	नीनु तुम्बा धैर्यशालियागि केलसा माडिदे।
आपने बड़ी मदद की।	ನೀವು ತುಂಬಾ ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ್ದೀರ.	नीवु तुम्बा सहाया माडिद्दीरा।
इसका श्रेय आपको जाता है।	ಇದರ ಶ್ರೇಯಸ್ಸು ನಿಮಗೆ ಸಲ್ಲಬೇಕು.	इदरा श्रेयस्सु निमगे सल्लबेकु।
हम आपके बड़े कृतज्ञ हैं।	ನಾವು ನಿಮಗೆ ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದೇವೆ.	नावु निमगे कृतज्ञरागिद्देवे।
आप ने बहुत अच्छ बोला।	ನೀವು ತುಂಬಾ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮಾತನಾಡಿದಿರಿ.	नीवु तुंबा चेन्नागि मातनाडिदिरि।
फिक्र की कोई बात नहीं है।	ಯೋಚಿಸುವ / ಚಿಂತಿಸುವ ಅಗತ್ಯವಿಲ್ಲಾ.	योचिसुवा / चिंतिसुवा अगत्यविल्ला.
तुम फिजूल परेशान हो रहे हो।	ನೀನು ವಿನಾಕಾರಣ ಚಿಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದೀಯ.	नीनु विना कारण चिंते माडुत्तिद्दीया.
मुझे तुम पर गर्व है।	ನನಗೆ ನಿನ್ನ ಮೇಲೆ / ಬಗ್ಗೆ ಹೆಮ್ಮೆ ಇದೆ.	ननगे निन्न मेले / बग्गे हेम्मे इदे.
हम आपके साथ है।	ನಾವು ನಿಮ್ಮ ಜೊತೆಗಿದ್ದೇವೆ / ನಾವು ನಿಮಗೆ ಬೆಂಬಲಿಸುತ್ತೇವೆ.	नावु निम्म जोतेगिद्देवे / नावु निमगे बेंबलिसुत्तेवे.
आप सही कर रहे है / सही रास्ते में है।	ನೀವು ಮಾಡುತ್ತಿರುದು ಸರಿಯಾಗಿದೆ / ನಿಮ್ಮ ದಾರಿ ಸರಿಯಾಗಿದೆ.	नीवु माडुत्तिरुवुदु सरियागिदे / निम्म दारि सरियागिदे.
आगे बढ़ो।	ಮುನ್ನುಗ್ಗು / ಮುಂದೆ ಹೋಗು.	मुन्नुग्गु / मुंदे होगु.
मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।	ನನಗೆ ಏನೂ ಬೇಡ.	ननगे एनू बेडा।
यह सच नहीं है।	ಇದು ನಿಜವಲ್ಲ.	इदु निजवल्ला।
आपको इसकी अनुमति नहीं देनी चाहिए।	ನೀವು ಇದಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ ಕೊಡಬಾರದು.	नीवु इदक्के अवकाशा कोडबारदु।
आप मेरे अनुरोध को टाल नहीं सकते।	ನೀವು ನನ್ನ ಕೋರಿಕೆಯನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸುವಂತಿಲ್ಲ.	नीवु नन्ना कोरिकेयन्नु तिरस्करिसुवंतिल्ला।
उसकी बातों पर ध्यान न दो।	ಅವನ ಮಾತಿಗೆ ಗಮನ ಕೊಡಬೇಡಿ.	अवना मातिगे गमना कोडबेडा।
सभी प्रयास / उपाय कर डाले।	ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದೆ.	एल्ला प्रयत्नवन्नु माडिदे।
तुम अकारण गुस्सा हो रहे हो।	ನೀನು ವಿನಾಕಾರಣ / ಯಾವುದೆ ಕಾರಣವಿಲ್ಲದೆ ಕೋಪಗೊಂಡಿದ್ದೀರ.	नीनु विनाकारण / यावुदे कारणविल्लदे कोपगोंडिद्दीरा।

नारज न / मत हो ।	ಕೋಪ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಡಿ.	कोपा माडिकोळ्ळबेडि।
इसमें मेरा दोष / कसूर नहीं।	ಇದರಲ್ಲಿ ನನ್ನ ತಪ್ಪಿಲ್ಲ.	इदरल्ली नन्ना तप्पिल्ला।
मेरे सारे किए धरे पर पानी फिर गया।	ನಾನು ಮಾಡಿದ ಕೆಲಸವೆಲ್ಲಾ ವ್ಯರ್ಥವಾಯಿತು.	नानु माडिदा केलसवेल्ला व्यर्थवायितु।
वह किसी भी काम का नहीं।	ಅವನು ಯಾವುದಕ್ಕೂ / ಯಾವ ಕೆಲಸಕ್ಕೂ ಪ್ರಯೋಜನವಿಲ್ಲಾ.	अवनु यावुदक्कू / याव केलसक्कू प्रयोजनविल्ला।
तुम्हें अपनी आदतों को सुधारना होगा।	ನೀನು ನಿನ್ನ ಅಭ್ಯಾಸಗಳನ್ನು ತಿದ್ದಿ ಕೊಳ್ಳಬೇಕು.	नीनु निन्ना अभ्यासगळन्नु तिदि कोळ्ळबेकु।
यह सब आपको ही करना है।	ಇದೆಲ್ಲಾ ನೀವೆ ಮಾಡಬೇಕು.	इदेल्ला नीवे माडबेकु।
तुम्हें अपने शब्द वापस लेने होंगे।	ನೀನು ನಿನ್ನ ಮಾತನ್ನು ಹಿಂತೆಗುಕೊಳ್ಳಬೇಕು.	नीनु निन्ना मातन्नु हिंतेगु कोळ्ळबेकु।
इस प्रकार बात करना आपको शोभा नहीं देता।	ಈ ರೀತಿ ಮಾತನಾಡುವುದು ನಿಮಗೆ ಶೋಭೆಯಲ್ಲಾ.	ई रीति मातनाडुवुदु निमगे शोभेयल्ला।
ऐसा सभी के साथ होता है।	ಎಲ್ಲಾರಿಗು ಆ ರೀತಿ ಆಗುತ್ತೆ.	एल्लारिगू आ रीति आगुत्ते।
मैंने ऐसा किसी गलत आशय से नहीं किया।	ನಾನು ಯಾವುದೆ ಕೆಟ್ಟ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ಈ ರೀತಿ ಮಾಡಿಲ್ಲಾ.	नानु यावुदे केट्ट उदेदशदिंदा ई रीति माडिल्ला।
इसमें आपकी कोई गलती नहीं।	ಇದರಲ್ಲಿ ನಿಮ್ಮ ತಪ್ಪೇನೂ ಇಲ್ಲಾ.	इदरल्ली निम्म तप्पेनू इल्ला।
आपने भारत के कौन–कौन से शहर देखे हैं ?	ನೀವು ಭಾರತದ ಯಾವ ಯಾವ ನಗರಗಳನ್ನು ನೋಡಿದ್ದೀರ ?	नीवु भारतद याव याव नगरगळन्नु नोडिद्दीरा ?
एक घंटे का सफर हैं।	ಒಂದು ಘಂಟೆಯ ಪ್ರಯಾಣ.	ओंदु घंटेय प्रयाणा।
आपका कब जाने का विचार है?	ನೀವು ಯಾವಾಗ ಹೋಗಬೇಕು ಎಂದದ್ದೀರಿ?	नीवु यावागा होगबेकु एंदिद्दीरि?
यह यात्रा लंबी है।	ಇದು ತಂಬಾ ದೂರದ ಪ್ರಯಾಣ.	इदु तुंबा दूरद प्रयाणा।
आप वापस कब लौटेंगे?	ನೀವು ಯಾವಾಗ ಹಿಂದಿರುಗುವಿರಿ.	नीवु यावागा हिंदिरुगुविरि?
मैं कल जा रहा हूँ।	ನಾನು ನಾಳೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.	नानु नाळे होगुत्तिद्देने।
वे अकेले ही यात्रा कर रहे हैं।	ಅವರು ಒಬ್ಬರೇ ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ.	अवरु ओब्बरे प्रयाणा माडुत्तारे।

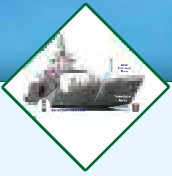

हिंदी कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना तथा अन्य राजभाषा पुरस्कार योजनाओं के विजेताओं की सूची

प्रेमचंद पुरस्कार, कार्यपालक (श्री / श्रीमती)

ऋतु लांबा
सी.ओ.,
प्रथम पुरस्कार

जितेंद्रिय नायक
सी.ओ.,
प्रथम पुरस्कार

नीरज कुमार चड्ढा,
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

कल्पना ए
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

अरूणा के
सी.ओ.,
तृतीय पुरस्कार

शशिकुमार
आर.ओ.,कोल.
तृतीय पुरस्कार

प्रेमचंद पुरस्कार, गैर-कार्यपालक (श्री / श्रीमती)

कविता के.पी.
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

लालम रमणा
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

उषा एल
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

आरती बुदप्पनवार,
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

सुनीता आर
सी.ओ., तृतीय पुरस्कार

संध्या पंत,
आर.ओ. दिल्ली,
तृतीय पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, गैर-कार्यपालक (श्री / श्रीमती)

हनी शर्मा
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

अंजू अग्रवाल
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

नितिन के पाटिल
आर.ओ.
मुंबई प्रथम पुरस्कार

बेबी शांता
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

ब्रजेश कुमार राय
आर.ओ. वैजाग,
प्रथम पुरस्कार

अजीत सिंह,
आर.ओ. दिल्ली,
द्वितीय पुरस्कार

मनोज कुमार नागवंशी
आर.ओ. दिल्ली,
द्वितीय पुरस्कार

अनीता भद्रा
आर.ओ. मुंबई,
द्वितीय पुरस्कार

अजय कुमार अग्रवाल
आर.ओ. कोल
द्वितीय पुरस्कार

गोपाल,
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

श्रीनाथ बी टी
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

पिंकु दे
आर.ओ.कोल.,
तृतीय पुरस्कार

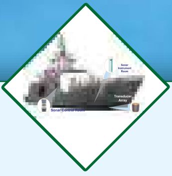

तमल सेन गुप्ता,
आर.ओ.कोल.,
तृतीय पुरस्कार

डी बी बिरनाले,
आर.ओ. मुंबई,
तृतीय पुरस्कार

ए एस राव
आर.ओ. वैजाग,
तृतीय पुरस्कार

विपिन सैनी
आर.ओ. दिल्ली,
तृतीय पुरस्कार

शिवनाथ कणसे
आर.ओ. मुंबई
चतुर्थ पुरस्कार

पी.वी.एस.वी. एस दत्त
आर.ओ. वैजाग,
चतुर्थ पुरस्कार

एम पृथ्वीराम
आर.ओ. वैजाग,
चतुर्थ पुरस्कार

जी वेंकटेशन
आर.ओ. वैजाग
चतुर्थ पुरस्कार

प्रसन्न कुमार जाधव
आर.ओ. मुंबई,
चतुर्थ पुरस्कार

चन्द्रभूषण राय
आर.ओ. दिल्ली,
चतुर्थ पुरस्कार

ई ए हरिहरन
सी.ओ.,
चतुर्थ पुरस्कार

जय शंकर प्रसाद पुरस्कार , गैर-कार्यपालक (श्री / श्रीमती)

शकुंतला वाई
सी.ओ.,
प्रथम पुरस्कार

वाणिश्री जे
सी.ओ.,
प्रथम पुरस्कार

देविका डी पी
सी.ओ.,
प्रथम पुरस्कार

किरण देठे
आर.ओ. मुंबई,
प्रथम पुरस्कार

सुमित्रा देवरानी
आर.ओ. दिल्ली,
प्रथम पुरस्कार

भार्गवी जे
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

प्रदीप कुमार साव,
आर.ओ. कोलकाता,
द्वितीय पुरस्कार

प्रदीप बिजलवान
आर.ओ. दिल्ली
द्वितीय पुरस्कार

बी. राजेश्वरी
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

शारदा सी. एच,
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

शुभा जानकी पी एस
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

प्रीता एम
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

उषा बी एन
सी.ओ.,
द्वितीय पुरस्कार

धीरज शामजी परमार,
आर.ओ. मुंबई,
तृतीय पुरस्कार

टी वी राव,
आर.ओ वैजाग,
तृतीय पुरस्कार

अरिजित दास
आर.ओ. कोलकाता
तृतीय पुरस्कार

मानसा आर.एस.,
सी.ओ.,
तृतीय पुरस्कार

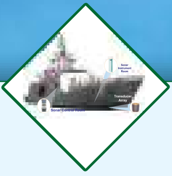

वी वी एस एन राजु
आर.ओ. वैजाग,
तृतीय पुरस्कार

संजय मारूती बांबे
आर.ओ. मुंबई,
चतुर्थ पुरस्कार

स्वाति एम.एस
सी.ओ.,
चतुर्थ पुरस्कार

एस प्रेम कुमार,
सी.ओ.,
चतुर्थ पुरस्कार

श्वेता वाई आर,
सी.ओ.,
चतुर्थ पुरस्कार

ममता एस,
सी.ओ.,
विशेष प्रोत्साहन

रेखा एस हेरेंजल
सी.ओ.,
विशेष प्रोत्साहन

मानसा नायका पी आर
सी.ओ.,
विशेष प्रोत्साहन

कबीर पुरस्कार (श्री)

मानस रंजन मिश्रा,
आर.ओ. कोलकाता

नागार्जुन पुरस्कार (श्री / श्रीमती)

नितिका सरीन,
गाजियाबाद

नितेश तिवारी,
गाजियाबाद

देवराज,
गाजियाबाद

साहित्यकार परिचय

अमृता प्रीतम

अमृता प्रीतम हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध कवयित्री, उपन्यासकार और निबंधकार हैं, जिन्हें 20वीं सदी की पंजाबी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री भी माना जाता है। इनकी लोकप्रियता सीमा पार पाकिस्तान में भी इतनी ही है। इन्होंने पंजाबी जगत् में छ: दशकों तक राज किया। अमृता प्रीतम ने कुल मिलाकर लगभग 100 पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें उनकी चर्चित आत्मकथा 'रसीदी टिकट' भी शामिल है। अमृता प्रीतम उन साहित्यकारों में थीं, जिनकी कृतियों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। अपने अंतिम दिनों में अमृता प्रीतम को भारत का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान 'पद्म विभूषण' भी प्राप्त हुआ। उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से पहले ही अलंकृत किया जा चुका था।

अमृता प्रीतम का जन्म 1919 में गुजराँवाला (पंजाब– पाकिस्तान) में हुआ था। बचपन लाहौर में बीता और शिक्षा भी वहीं पर हुई। इन्होंने पंजाबी लेखन से शुरुआत की और किशोरावस्था से ही कविता, कहानी और निबंध लिखना शुरू किया। अमृता जी 11 साल की थी तभी इनकी माताजी का निधन हो गया, इसलिए घर की जिम्मेदारी भी इनके कंधों पर आ गई। वे उन विरले साहित्यकारों में से है जिनका पहला संकलन 16 साल की आयु में प्रकाशित हुआ। फिर आया 1947 का विभाजन का दौर, इन्होंने विभाजन का दर्द सहा था और इसे बहुत करीब से महसूस किया था। इनकी कई कहानियों में आप इस दर्द को स्वयं महसूस कर सकते हैं। विभाजन के समय इनका परिवार दिल्ली में आ बसा। अब इन्होंने पंजाबी के साथ–साथ हिंदी में भी लिखना शुरू किया। इनका विवाह 16 साल की उम्र में ही एक संपादक से हुआ, ये रिश्ता बचपन में ही माँ–बाप ने तय कर दिया था। यह वैवाहिक जीवन भी 1960 में तलाक के साथ टूट गया।

1940 के दशक में वे समाज सेवा से जुड़ीं और उन्होंने लाहौर रेडियो स्टेशन में काम भी किया और इन सब ने, जीवन के, उनके अनुभव को और गहराया और समाज के वंचितों और खासकर स्त्रियों के प्रति उनकी संवेदना को बड़ा प्रभावित किया। यह सब उनकी 1940 के बाद की कविताओं में उभर कर आया जिससे कि उनके काव्य में न केवल सामाजिक सोद्देश्यता का पुट मिला बल्कि एक किस्म की राजनीतिक आक्रामकता भी आ गई। अपने 'लोक पीड़' कविता संग्रह में जिस प्रकार से 1944 के बंगाल के अकाल का वर्णन उन्होंने किया, उससे उनकी सामाजिक पक्षधरता स्पष्ट दिखने लगी। अमृता को सम्मानित साहित्य अकादमी पुरस्कार भी अपने कविता संग्रह, 'सन्हेड़े' के लिए मिला था, जिसमें उन्होंने साहिर के प्रति अपने प्रेम को ही कविताओं की शक्ल दी थी। साहित्य अकादमी प्राप्त करने वाली, अमृता पहली महिला लेखिका थीं।

अमृता प्रीतम की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कई विधाओं में रचना की और जर्मनी, फ्रांस, हंगरी, मॉरिशस, चेकोस्लोवाकिया, रूस और बुल्गारिया आदि देशों की यात्राएं की। अमृता प्रीतम ने लंबी बीमारी के बाद 31 अक्टूबर 2005 को 86 वर्ष की आयु में दुनिया को अलविदा कह दिया। उन्होंने अपनी आखिरी नज्म 'मैं तुम्हें फिर मिलूंगी' लिखी थी जो बहुत लोकप्रिय हुई। वहीं उनकी रचनाएं हमेशा ही हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी और वह साहित्य जगत में सदा ही जीवित रहेगी। विभाजन की पीड़ा को लेकर इनके उपन्यास 'पिंजर' पर एक फिल्म भी बनी थी, जो अच्छी खासी चर्चा में रही। अब वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी कविताएँ, कहानियाँ, नज्में और संस्मरण सदैव ही हमारे बीच रहेंगे।

बी ई एल कथन गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ हैं यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम हैं बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS
QUALITY, TECHNOLOGY, INNOVATION
गुप्त सैन्य प्रचालनों के लिए
बीईएल के भरोसेमंद उपकरण
रक्षा क्षेत्र की बेजोड़ प्रणालियां
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
पंजीकृत व कार्पोरेट कार्यालय, आउटर रिंग रोड, नागवारा, बेंगलूरु – 560 045, टेली. +91 80 25090300
फैक्स - + 91 80 25039291, टॉल फ्री – 1800 425 0433, सीआईएन – L32309KA1954GOI000787, www.bel-india.in